नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 06
दि. 06.10.2025,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

उत्तर बंगाल में बारिश और बाढ़ से तबाही, सेना और NDRF ने संभाला मोर्चा

(जीएनएस)। कोलकाता/दार्जिलिंग। उत्तर बंगाल इन दिनों भीषण बारिश और बाढ़ से जूझ रहा है। भारी वर्षा के कारण दार्जिलिंग, जलपाईगुड़ी, अलीपुरद्वार और डूआर्स क्षेत्रों में भूस्खलन, सड़कें टूटने और पुल बह जाने जैसी घटनाएं लगातार सामने आ रही हैं। अब तक 27 लोगों की जान जा चुकी है और कई गांव बाहरी संपर्क से कट चुके हैं। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए सेना, NDRF और राज्य पुलिस ने राहत और बचाव के मोर्चे संभाल लिए हैं।

सेना ने अस्थायी पुल निर्माण की तैयारी शुरू कर दी है। केंद्र सरकार के निर्देश पर दुदिया में एक टीम तैनात की गई है, जो क्षेत्र में अस्थायी पुल बनाने का कार्य करेगी। सेना के इंजीनियरिंग कोर के अधिकारी हालात का जायजा लेकर जल्द ही निर्माण कार्य शुरू करेंगे ताकि संपर्कविहीन इलाकों को जोड़ा जा सके।

भूटान के ताला हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट से उत्पन्न खतरा भी उत्तर बंगाल के लिए गंभीर है। बांध के गेट खुलने में तकनीकी दिक्कत के कारण पानी बांध के ऊपर फैल गया है। भूटान सरकार ने पश्चिम बंगाल को अलर्ट रहने का निर्देश दिया है। यदि भारी बारिश जारी रही, तो नदियों में अचानक बाढ़ की आशंका बनी हुई है।

एनडीआरएफ ने अलीपुरद्वार, सिलीगुड़ी, मालदा और कोलकाता से टीमें तैनात कर हाई अलर्ट मोड घोषित कर दिया है। छुट्टी पर गए कर्मियों को वापस बुला लिया गया है और सिलीगुड़ी से अतिरिक्त 15 बचावकर्मियों को डूआर्स क्षेत्र भेजा गया है।

दार्जिलिंग उपखंड के मिरिक क्षेत्र में भूस्खलन से कई गांव प्रभावित हुए हैं और सड़क मार्ग बंद होने के कारण राहत सामग्री पहुंचाना चुनौतीपूर्ण हो गया है। एनडीआरएफ की टीमें स्थानीय प्रशासन और ग्रामीणों के साथ मिलकर रास्ते बहाल करने में जुटी हैं। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने हालात पर चिंता जताई और कहा कि राज्य सरकार राहत कार्यों के लिए पूरी तरह तैयार है। वहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केंद्रीय एजेंसियों को हरसंभव सहायता देने का निर्देश दिया है। मौसम विभाग ने भी पूर्वी उत्तर प्रदेश से उठा तूफान डूआर्स क्षेत्र की ओर बढ़ने की चेतावनी जारी की है, जिससे अगले 48 घंटे बेहद संवेदनशील रहने की संभावना है। दार्जिलिंग, सिलीगुड़ी और अलीपुरद्वार में सेना और NDRF की टीमें सक्रिय हैं और प्रशासन ने नदी किनारे और ढलानों पर बसे गांवों को सुरक्षित स्थानों पर स्थानांतरित करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। बांध और नदियों के जलस्तर की निगरानी लगातार जारी है। राहत एजेंसियां युद्धस्तर पर काम कर रही हैं और स्थानीय निवासियों को सतर्क रहने के लिए कहा गया है। उत्तर बंगाल इस समय प्राकृतिक आपदा की चपेट में है और स्थिति बेहद नाजुक बनी हुई है।

अनुराग ठाकुर बने हिमाचल प्रदेश ओलंपिक संघ के नए अध्यक्ष

(जीएनएस)। शिमला। हिमाचल प्रदेश ओलंपिक संघ (एचपीओए) की वार्षिक आम बैठक रविवार को शिमला में आयोजित की गई, जिसमें राज्य भर से आए सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस बैठक में सर्वसम्मति से नई कार्यकारिणी का चुनाव किया गया और पूर्व केंद्रीय खेल मंत्री अनुराग ठाकुर को संघ का नया अध्यक्ष चुना गया। बैठक में कुल 17 सदस्यों की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। नए अध्यक्ष के नेतृत्व में चयनित प्रमुख पदाधिकारी इस प्रकार हैं: वीरेंद्र कंवर को मुख्य संरक्षक, विधायक बलबीर वर्मा को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, राजेश भंडारी को महासचिव, अमिताभ शर्मा को कोषाध्यक्ष और ईश्वर रोहल, उषा बरोवालिया एवं नरेन्द्र अत्री को उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। इसके अलावा, राज कुमार निट्टू, डॉ. राहुल पठानिया और रमेश चौहान को संयुक्त सचिव की जिम्मेदारी सौंपी गई है। सभा को संबोधित करते हुए अनुराग ठाकुर ने कहा कि

हिमाचल प्रदेश में खेलों के विकास को अपनी प्राथमिकता बनाया जाएगा। उन्होंने राज्य में खेल अवसंरचना को मजबूत करने, योग्य प्रशिक्षकों की संख्या बढ़ाने और जमीनी स्तर पर युवा प्रतिभाओं को तराशने के लिए भागीदारी को बढ़ावा देने का संकल्प साझा किया। नई कार्यकारिणी के साथ राज्य में खेल क्षेत्र में गुणवत्ता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के प्रयासों को गति मिलने की उम्मीद है।

भारत सेमीकंडक्टर, एआई और स्वदेशी दूरसंचार में वैश्विक नेतृत्व की ओर

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत अब सेमीकंडक्टर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और स्वदेशी दूरसंचार तकनीक के क्षेत्र में तेजी से वैश्विक नेतृत्व की दिशा में अग्रसर है। केंद्रीय संचार और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया ने नई दिल्ली में चौथे कौटिल्य आर्थिक सम्मेलन में कहा कि भारत अब केवल निवेश का गंतव्य नहीं, बल्कि विश्व के लिए दिशा और दृष्टि प्रस्तुत करने वाला देश बन गया है।

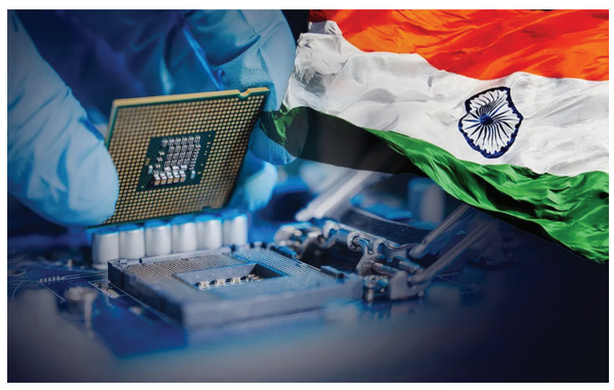

सिंधिया ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने वैश्विक चुनौतियों को अवसरों में बदलते हुए 76 हजार करोड़ रुपये की 'भारत सेमीकंडक्टर मिशन' शुरू की है। इसके तहत 85 हजार युवाओं को प्रशिक्षण दिया जा रहा है और अब तक 1.6 लाख करोड़ रुपये से अधिक का निवेश हो चुका है। उन्होंने कहा कि यह मिशन भारत को आत्मनिर्भर और भविष्य के लिए तैयार अर्थव्यवस्था बनाने में निर्णायक भूमिका निभा रहा है। सिंधिया ने आगे कहा कि भारत में 1.22 अरब टेलीफोन ग्राहक और 94.4 करोड़ ब्रॉडबैंड उपयोगकर्ता हैं, और केवल 22 महीनों में देश के 99.8 प्रतिशत जिलों में 5जी नेटवर्क स्थापित किया गया है। उन्होंने डिजिटल भुगतान प्रणाली की उपलब्धियों का भी उल्लेख करते हुए कहा कि भारत का यूपीआई प्लेटफॉर्म सालाना लगभग 260 अरब लेनदेन करता है, जो विश्व के कुल डिजिटल लेनदेन का 46 प्रतिशत है।

केंद्रीय मंत्री ने जोर देकर कहा कि भारत ने एआई, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर और स्वदेशी दूरसंचार तकनीकों के माध्यम से नवाचार और समावेशन के क्षेत्र में वैश्विक उदाहरण स्थापित किया है। यह उपलब्धियां न केवल आर्थिक विकास, बल्कि देश की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता और तकनीकी आत्मनिर्भरता का भी प्रतीक हैं।

भूटान में बाढ़ राहत: भारतीय सेना ने नागरिकों को सुरक्षित स्थानों तक पहुँचाया

फुनशोलिंग (भूटान)। बंगाल की खाड़ी में बने गहरे दबाव और लगातार हुई भारी वर्षा के कारण तोरसा नदी उफान पर आ गई, जिससे पश्चिम बंगाल और भूटान के कई इलाके जलमग्न हो गए। इस आपात स्थिति में 5 अक्टूबर को भूटान के फुनशोलिंग क्षेत्र से आपात निकासी की मांग मिलने पर भारतीय सेना ने तुरंत कार्रवाई करते हुए सिवोक रोड एविएशन बेस से दो हेलिकॉप्टर राहत और बचाव अभियान के लिए रवाना किए। भारतीय सेना के जनसंपर्क अधिकारी (पीआरओ) के अनुसार, कठिन मौसम और कम दृश्यता के बावजूद पायलटों ने पहले हवाई सर्वेक्षण किया और फिर जोखिम भरे इलाकों में कुशलतापूर्वक लैंडिंग कर फंसे नागरिकों को सुरक्षित स्थानों तक पहुँचाया। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि भारतीय सेना हर संकट की घड़ी में नागरिक प्रशासन की मदद के लिए तत्पर रहती है। यह सफल अभियान न केवल भारतीय सेना की मानवीय सहायता और आपदा राहत कार्यों के प्रति समर्पण को दर्शाता है, बल्कि 'सेवा परमो धर्मः' के सिद्धांत को साकार करते हुए भारत और भूटान के बीच सहयोग और मित्रता को भी और मजबूत करता है। इस अभियान ने यह साबित कर दिया कि संकट की घड़ी में भारतीय सेना हमेशा नागरिकों की सुरक्षा और सहायता के लिए अग्रणी रहती है।

जेवर नोएडा एयरपोर्ट में तैयार हो रहा देश का सबसे बड़ा ग्राउंड ट्रांसपोर्टेशन सेंटर

(जीएनएस)। गौतम बुद्ध नगर। गौतम बुद्ध नगर के जेवर में बन रहा नोएडा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा अब उद्घाटन के लिए पूरी तरह तैयार है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 30 अक्टूबर को इस अत्याधुनिक एयरपोर्ट का उद्घाटन करेंगे। एयरपोर्ट में यात्रियों को विश्वस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध होंगी, जिनमें जेट ब्रिज, सौर ऊर्जा से संचालित संरचना और जलभराव-रोधी बुनियादी ढांचा शामिल है।

इस एयरपोर्ट परिसर में देश का सबसे बड़ा ग्राउंड ट्रांसपोर्टेशन सेंटर (GTC) भी विकसित किया जा रहा है। लगभग 20 एकड़ क्षेत्र में तैयार हो रहे इस केंद्र में 1200 से अधिक वाहनों की पार्किंग और ई-व्हीकल चार्जिंग की सुविधा होगी। पहले चरण का निर्माण लगभग 80 प्रतिशत पूरा हो चुका है और उद्घाटन तक इसे पूर्ण करने की संभावना है।

GTC एयरपोर्ट टर्मिनल के नजदीक बनाया गया है ताकि यात्री सीधे कैब, टैक्सी, बस, मेट्रो और नमो भारत ट्रेन तक आसानी से पहुंच सकें। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और हरियाणा रोडवेज की बसें एयरपोर्ट खुलते ही सेवा में लग जाएंगी। इसके अलावा Uber, Rapido और Mahindra जैसी टैक्सी सेवाएं भी उपलब्ध रहेंगी।

यात्री इससे देहरादून, हरिद्वार, ऋषिकेश, गुरुग्राम, फरीदाबाद, पानीपत, अंबाला, हल्द्वानी, कुरुक्षेत्र और चंडीगढ़ तक सीधी और सुविधाजनक कनेक्टिविटी प्राप्त कर सकेंगे। नोएडा एयरपोर्ट का GTC जर्मनी के फ्रैंकफर्ट और लंदन के हीथ्रो एयरपोर्ट की तर्ज पर विकसित किया जा रहा है। एक ही छत के नीचे बस, मेट्रो, कार और ट्रेन की सुविधा होगी। भूमिगत स्टेशन और विशाल कॉनकोर्स क्षेत्र में शॉपिंग, रेस्टोरेंट, लाउंज और अन्य व्यावसायिक गतिविधियों की व्यवस्था भी की गई है।

पहले चरण में 3.9 किलोमीटर लंबा रनवे और एक यात्री टर्मिनल तैयार होगा, जो सालाना 1.2 करोड़ यात्रियों को संभालने की क्षमता रखता है। एयरपोर्ट में सौर ऊर्जा से संचालित सिस्टम, दस फुली फंक्शनल जेट ब्रिज, ATRS बैगेज स्कैनिंग सिस्टम और 180-डिग्री सर्विलांस वाला अग्निशमन एवं बचाव टावर भी स्थापित किया गया है।

नोएडा अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट का विकास उत्तर प्रदेश सरकार और ज्यूरिख एयरपोर्ट की सहायक कंपनी के साथ पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (PPP) मॉडल पर किया जा रहा है। यह एयरपोर्ट दिल्ली एयरपोर्ट का पूरक बनकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय यात्रा को नया आयाम देगा। जेवर एयरपोर्ट और इसके GTC के माध्यम से भारत को आधुनिक, एकीकृत और सुगम परिवहन केंद्र प्राप्त होगा, जो यात्रियों को हर माध्यम से सहज तराशने के लिए भागीदारी को बढ़ावा देने का संकल्प साझा किया। नई कार्यकारिणी के साथ राज्य में खेल क्षेत्र में गुणवत्ता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के प्रयासों को गति मिलने की उम्मीद है।

रूस ने वेनेजुएला के पास अमेरिकी हमले की कड़ी निंदा की

मास्को। रूस ने वेनेजुएला के तट के पास एक कथित मादक पदार्थों से भरे जहाज पर अमेरिका द्वारा किए गए हमले की कड़ी निंदा की है। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने वेनेजुएला के विदेश मंत्री इवान गिल के साथ टेलीफोन पर बातचीत करते हुए कहा कि मॉस्को इस हमले की गहन भर्त्सना करता है।

रूसी विदेश मंत्रालय द्वारा जारी बयान में कहा गया कि दोनों मंत्रियों ने कैरिबियन सागर में वाशिंगटन की बढ़ती आक्रामक गतिविधियों पर गंभीर चिंता व्यक्त की, जो क्षेत्र के लिए दूरगामी परिणाम ला सकती हैं। इस दौरान दोनों पक्षों ने क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया।

गौरतलब है कि 3 अक्टूबर को किए गए इस हमले में चार लोगों की मौत हुई थी। अमेरिकी अधिकारियों ने आरोप लगाया कि जहाज "अवैध मादक पदार्थों की बड़ी खेप लेकर अमेरिका की ओर जा रहा था, जिसका उद्देश्य वहां के नागरिकों को विषाक्त करना था।" इस हमले को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी विवाद और तनाव बढ़ने की आशंका जताई जा रही है।

एक और साजिश! पाकिस्तान भारत के खिलाफ नाटो जैसी सैन्य गठबंधन बनाने की तैयारी में

(जीएनएस)। नई दिल्ली। पहलगाम आतंकी हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर में नाकामी के बावजूद पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। भारत के खिलाफ लगातार साजिश रचते हुए वह नाटो की तर्ज पर एक सैन्य गठबंधन बनाने की योजना बना रहा है। इसके तहत पाकिस्तान ने पहले ही सऊदी अरब के साथ एक रक्षा समझौता किया है, जो इस कोशिश का हिस्सा माना जा रहा है।

पाकिस्तान के उप-प्रधानमंत्री इशाक डार ने हाल ही में कहा कि कई इस्लामी और गैर-इस्लामी देशों ने सऊदी-पाकिस्तान रक्षा समझौते में शामिल होने में रुचि दिखाई है। यदि और देश इस गठबंधन में शामिल हो जाते हैं, तो यह "नाटो जैसा" मजबूत सैन्य संगठन बन सकता है। डार ने यह भी दावा किया कि पाकिस्तान ईश्वर की इच्छा से 57 इस्लामी देशों का नेतृत्व करेगा। सऊदी अरब और पाकिस्तान के बीच हुए इस रक्षा समझौते में यह प्रावधान है कि किसी एक देश पर हमला दोनों के विरुद्ध हमला माना जाएगा। यह समझौता इजराइल के कतर पर हमले के तुरंत बाद हुआ था, जिससे अरब देशों में सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है।

हालांकि पाकिस्तान की कोशिशों के बावजूद एक प्रभावी इस्लामी सैन्य गठबंधन बनाना आसान नहीं है। मुस्लिम देशों के बीच राजनीतिक और क्षेत्रीय मतभेद—जैसे सऊदी अरब और ईरान, कतर और संयुक्त अरब अमीरात, तुर्की और मिस्र—इस प्रयास को कमजोर करते हैं। कई अरब शासक ईरान पर भरोसा नहीं करते, जिससे यह योजना खोखली दिखाई देती है।

सऊदी-पाकिस्तान रक्षा समझौते ने इस्लामी या अरब नाटो के गठन की चर्चा को फिर से तवज्जो दी है। सऊदी अरब ने अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी पाकिस्तान को सौंपते हुए एक परमाणु मुस्लिम राष्ट्र के साथ गठबंधन मजबूत किया है। तुर्की भी इस तरह के इस्लामी सैन्य गठबंधन की मांग करता रहा है। वहीं, वाशिंगटन के दोहा पर मिसाइल हमले को रोकने में विफल रहने के बाद अरब देशों की अमेरिकी सुरक्षा पर निर्भरता कमजोर हो रही है। रक्षा विशेषज्ञ मानते हैं कि अब अरब देशों के पास अपने लिए "वास्तविक और ठोस उपाय" करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है।

भारत के लिए यह प्रयास गंभीर निहितार्थ रखता है। अगर पाकिस्तान इस तरह का बहुपक्षीय सैन्य गठबंधन बनाने में सफल होता है, तो यह भारत के खिलाफ एक और चुनौती साबित हो सकता है। इससे पाकिस्तान को बहुपक्षीय मंच मिलेगा, जिससे वह भारत विरोधी गतिविधियों को और मजबूत कर सकता है। हालांकि, राजनीतिक, धार्मिक और क्षेत्रीय मतभेद इस गठबंधन को साकार करना आसान नहीं होने देंगे।

गाज़ा पर नियंत्रण नहीं छोड़ा तो होगा पूर्ण विनाश: ट्रंप ने हमास को दी अंतिम चेतावनी

(जीएनएस)। वॉशिंगटन/गाज़ा। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार को हमास को अंतिम चेतावनी दी है। ट्रंप ने कहा कि अगर संगठन गाज़ा की सत्ता और नियंत्रण नहीं छोड़ता और उनकी शांति योजना स्वीकार नहीं करता, तो उसे पूरी तरह विनाश का सामना करना पड़ेगा। ट्रंप ने हमास को शांति प्रस्ताव स्वीकार करने, इज़रायली बंधकों को रिहा करने और लड़ाई बंद करने के लिए सोमवार सुबह 03:30 बजे तक की समय-सीमा दी थी। ट्रंप ने स्पष्ट किया कि यह उनका आखिरी मौका है। यदि हमास योजना मान लेता है, तो युद्ध तुरंत समाप्त कर दिया जाएगा। इज़राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू पहले ही ट्रंप की युद्धविराम योजना का समर्थन कर चुके हैं। ट्रंप की ओर से पेश की गई 20-बिंदु शांति योजना में गाज़ा की भविष्य की व्यवस्था की रूपरेखा भी शामिल है। योजना के मुख्य बिंदु में गाज़ा में तत्काल युद्धविराम, अस्थायी प्रशासनिक बोर्ड का गठन जिसमें अंतरराष्ट्रीय हस्तियां और ट्रंप का प्रतिनिधित्व शामिल होगा, और नागरिकों को उनके घरों से बेदखल न करने का आश्वासन शामिल है। यदि दोनों पक्ष शर्तें मानते हैं, तो लड़ाई तत्काल रुकेगी। हमास ने योजना के कुछ हिस्सों जैसे युद्ध समाप्त करना, इज़रायली सेनाओं की वापसी और बंधकों की रिहाई का समर्थन किया है, लेकिन हथियार छोड़ने जैसे संवेदनशील मुद्दों पर संगठन अभी भी बातचीत करना चाहता है। इस विषय पर मिस्र में हमास, इज़राइल और अमेरिकी प्रतिनिधियों के बीच वार्ता जारी है। अमेरिकी प्रशासन के वरिष्ठ नेताओं ने चेतावनी दी है कि गाज़ा में युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है। अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने कहा कि बंधकों की रिहाई पहला कदम होगा, उसके बाद ही गाज़ा के भविष्य और शासन व्यवस्था पर विस्तृत बातचीत संभव होगी। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि फिलहाल किसी बात की पूर्ण गारंटी नहीं दी जा सकती और कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। विश्लेषकों का मानना है कि ट्रंप की शांति पहल दोनों पक्षों के बीच समझौते पर निर्भर है। यदि हमास निर्धारित समय में शर्तें स्वीकार नहीं करता, तो क्षेत्रीय तनाव और मानवीय संकट और बढ़ सकते हैं, जिससे सैन्य टकराव की संभावना भी बढ़ जाएगी।

संपादकीय

सभ्य समाज के लिये शर्म की बात

बेटियों की साक्षरता में वृद्धि और कामकाजी क्षेत्र में लगातार उनकी बढ़ती भूमिका के बावजूद यदि दहेज उत्पीड़न की घटनाओं में वृद्धि होती है, तो यह शर्मनाक स्थिति ही कही जाएगी। राष्ट्रीय क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो यानी एनसीआरबी की वह रिपोर्ट चौंकती है कि साल 2023 के दौरान देश में दहेज उत्पीड़न की घटनाओं में 14 फीसदी मामले ज्यादा दर्ज किए गए हैं। इस वर्ष के दौरान दहेज के कारण देशभर में 6,100 महिलाओं की मौत दर्ज की गई है। 21वीं सदी को ज्ञान की सदी कहा जा रहा है और हम रूढ़िवादी सोलहवीं सदी में जी रहे हैं। लड़कियों के साथ यदि परिवार व्यवस्था में भेदभाव होता है और भ्रूण हत्या की प्रवृत्ति बढ़ती है, तो उसके मूल में भी दहेज का अभिशाप ही है। लगातार खर्चीली होती उच्च शिक्षा व्यवस्था में बेटियों की शिक्षा पर बड़ा खर्च करने के बाद यदि मां-बाप को दहेज देना पड़ता है तो यह शर्मनाक स्थिति है। हालांकि, पिछले कुछ समय से पारिवारिक विवाद व अन्य कारकों को दहेज का मामला बनाने के कुछ मामले अदालतों की चिंता का भी विषय रहे हैं। लेकिन इसके बावजूद समाज में दहेज के लिये उत्पीड़न की घटनाएं कटु सत्य है। यह भी एनसीआरबी की रिपोर्ट का यथार्थ है कि देश में हर रोज दहेज के लिये हत्याएं दर्ज हो रही हैं। बेटियों को पढ़ाने तथा सरकारों द्वारा उनके सशक्तीकरण के तमाम प्रयासों के बावजूद दहेज का दानव यदि अट्टहास कर रहा है तो यह हमारे समाज की असफलता ही कही जाएगी।

निस्संदेह, हमारे समाज में सोच में बदलाव लाने की जरूरत है। एक समय नारा लगाया जाता था कि दुल्हन ही दहेज है। इस नारे को हकीकत बनाने की जरूरत है। कहीं न कहीं इस संकट के मूल में पितृसत्तात्मक सोच भी जिम्मेदार है। जिसमें स्त्रियों को वाजिब हक न देकर उन्हें कमतर आंका जाता है। इस बात पर विचार किया जाना चाहिए कि दहेज प्रथा उन्मूलन के लिये सख्त कानून होने के बावजूद इस कुप्रथा पर रोक क्यों नहीं लग पा रही है। आखिर क्यों दहेज निषेध अधिनियम के अंतर्गत मामले लगातार बढ़ रहे हैं। समाज में साक्षरता वृद्धि और जागरूकता अभियानों के बावजूद स्थिति जस की तस है। विडंबना यह है कि दहेज उत्पीड़न के ज्यादातर मामले बड़े हिंदी प्रदेशों में सामने आए हैं। सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश में और फिर बिहार दूसरे नंबर पर है। ये हजारों मामले समाज में स्त्रियों की विडंबनापूर्ण स्थिति को ही दर्शाते हैं। समाज में उपभोक्तावादी सोच के चलते भी दहेज की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है। हमें विचार करना होगा कि समाज में दहेज के संकट की जड़ों पर कैसे प्रहार किया जाए। राष्ट्र का विकास तब तक एकांगी ही रहेगा, जब तक आधी दुनिया को समाज में सम्मानजनक स्थान नहीं मिलता। दहेज के मामलों में न्याय भी शीघ्र देने की आवश्यकता है। आज जरूरत इस बात की है कि बेटियों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया जाए, ताकि वे समाज में सम्मानजक ढंग से बिना किसी पर निर्भर रहकर जीवनयापन कर सकें।

राहुल गांधी के लिए घरेलू चुनौतियों पर ध्यान देना जरूरी

कांग्रेस नेता राहुल गांधी विदेश यात्राओं के दौरान अकसर सत्तारूढ़ पार्टी की आलोचना करते रहे हैं जिस पर देश में सवाल उठते हैं। ऐसी बयानबाजी उन्होंने हाल ही में कोलंबिया से की। जबकि देश की सबसे महत्वपूर्ण विपक्षी पार्टी की बेहतरी के लिए जरूरी है कि वे प्रतिदिन संसद के अंदर और बाहर अपनी दलीलों को धारदार बनाने के लिए तैयार रहें।

कोलंबिया के एनविगाडो से अपलोड की गई हालिया तसवीर में, राहुल गांधी ने अपनी पहचान का मार्का बनी सफ़ेद टी-शर्ट की जगह नेवी ब्लू शर्ट, पफ़र जैकेट और खाकी कार्गो पैंट पहन रखी है; पृष्ठभूमि में बजाज ऑटो निर्मित पल्सर बाइक है। एक्स पर डाली इस फोटो के साथ संलग्न कमेंट है—'कोलंबिया में बजाज, हीरो और टीवीएस को इतना अच्छा प्रदर्शन करते देख गर्व हो रहा है। यह दर्शाता है कि भारतीय कंपनियां दोस्तवाद से नहीं बल्कि नवाचार से जीत सकती हैं।'

लेकिन कांग्रेस पार्टी के सबसे महत्वपूर्ण नेता को ज़रूर पता होना चाहिए कि बजाज ऑटो के प्रबंध निदेशक राजीव बजाज के पिता राहुल बजाज- उदारीकरण से पहले युग में, लाइसेंस राज के दिनों में, जब भयानक लालफीताशाही से निबटने में सही लोगों तक पहुंच रखना ज़रूरी था- वे संरक्षणवाद के अग्रणी पैरोकार थे और उन्होंने आर्थिक सुधार के विचार के ख़िलाफ़ तगड़ी लड़ाई लड़ी थी। बड़े पूंजीपतियों एवं उद्योगपतियों का गुट,बॉम्बे क्लब, सीनियर बजाज जिसके एक सक्रिय सदस्य थे, उसका जोर अपने कामकाज में आमूल-चूल सुधार की बजाय सामाजिक-राजनीतिक संबंधों पर ज्यादा था, गलाकाट महत्वाकांक्षा में उलझने की बजाय भाईचारा निभाने का बीते वक्त का सुलभ रास्ता, तथापि था तो दोस्तवाद ही।

राहुल की सोशल मीडिया टिप्पणी गौरतलब है कि वे कोलंबिया और ब्राज़ील सहित चार दक्षिण अमेरिकी देशों में से पहले देश की यात्रा पर हैं - हालांकि कांग्रेस पार्टी ने यह नहीं बताया कि शेष दो मुल्क कौन से हैं। बीते गुरुवार को उन्होंने एनविगाडो स्थित ईआईए विश्वविद्यालय का दौरा किया, जहां उन्होंने भाजपा द्वारा 'भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर व्यापक हमले' के बारे में बात की।

Advertisement

इस टिप्पणी पर खूब आलोचना हुई कि कांग्रेस नेता विदेशी जमीं से सत्तारूढ़ पार्टी पर बार-बार हमला क्यों करते हैं, जिससे आगे ये प्रश्न उठते हैं: क्या घरेलू राजनीति की आलोचना देश के भीतर तक ही सीमित रहनी चाहिए? क्या आंतरिक राजनीतिक

लड़ाई को विदेशी धरती तक ले जाकर राहुल पूरी तरह गलत कर रहे हैं? और तीसरा, कुछ हद तक असंबंधित प्रश्न, यह कि राहुल गांधी दक्षिण अमेरिका गए क्यों –ठीक वैसे ही जब कुछ महीने पहले मलेशिया, अप्रैल में बोस्टन, और साल की शुरुआत में दो बार वियतनाम भी गए?

यह लेख 2014 के बाद से राहुल की कथित 247 विदेश यात्राओं के बारे में नहीं है, जैसा कि भाजपा हमें यकीन दिलवाना चाहती है, जोकि सच नहीं है - निश्चित रूप से, कांग्रेस नेता को अपने विचार फैलाने, नई जगहों की यात्रा करने और नए लोगों को प्रभावित करने का हक है। हालांकि, अब समय आ गया है कि उस समस्या का सामाना करने का जो पिछले कुछ वर्षों से भारत के लोकतंत्र के दिल में कुलबुला रहा है - यानि सत्तारूढ़ भाजपा और भारत की सबसे महत्वपूर्ण विपक्षी पार्टी के बीच बढ़ती दरार। यह तनाव इस तथ्य से और बढ़ गया है कि नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने के बाद से, पिछले एक दशक में कांग्रेस चुनाव-दर-चुनाव हारती गई है। लेकिन क्योंकि यह अभी भी देश की सबसे महत्वपूर्ण विपक्षी पार्टी बनी हुई है –भले ही कुछ सूबों में भाजपा की बजाय कुछ अन्य दल सत्तारूढ़ हैं, चाहे यह डीएमके, टीएमसी, 'आप' या फिर वाम मोर्चा हो, लेकिन वे गिनती में नहीं हैं– और कांग्रेस पर ही भाजपा के अनवरत और भयानक प्रहारों का निशाना रही है। यहां तक कि जवाहरलाल नेहरू जैसे राजनेता, जिन्होंने देश को एक आधुनिक, धर्मनिरपेक्ष गणराज्य के पथ पर अग्रसर किया, निशाने पर हैं।

पार्टी के सबसे ताकतवर व्यक्ति होने के नाते राहुल गांधी तो और भी आसान शिकार हैं, लेकिन उन्हें वह करना मंजूर नहीं कि नेता को कीलों वाली कुर्सी पर बैठना या कांटों का ताज पहनना पड़ता है। वे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में दिखाई दे रहे हैं, जो पद से जुड़ी ज़िम्मेवारी निभाए बिना सत्ता चाहता है। एक ऐसा व्यक्ति जिसका दिल सोने का है, जिसके निजी जीवन की त्रासदियां देवता तक को रुला दें—लेकिन वह जो अपने से बेहतर व्यक्ति के पक्ष में हटने से इनकार करता है (भगवान न करे), क्योंकि उन्हें लगता है कि बतौर नेता प्रतिपक्ष या इस पद के बिना भी, केंद्र वही हैं। कि अगर यह केंद्र नहीं टिकेगा, तो सब बिखर जाएगा। और यही आज भारतीय लोकतंत्र के मूल की एक दरार है : राहुल गांधी वह लोकतांत्रिक व्यक्ति हैं जो नरेंद्र मोदी को सत्ता में बनाए रखने की राह तैयार करते हैं। बाकी काम भाजपा कर लेती है।

हो सकता है, यह वाकई एक कठोर निष्कर्ष हो। लेकिन सच्चाई यह है कि वह देश, जो हर दिन बदल रहा है, उसे राहुल की आलोचनाओं के अलावा अन्य विचारों की दरकार है, खासकर जब वह विदेश में हों। साल 2022 में लंदन में उन्होंने कहा था कि भारत की आवाज़ कुचली जा रही है; मार्च 2023 में कैम्ब्रिज में उन्होंने कहा कि भाजपा भारतीय लोकतंत्र के मूल ढांचे पर हमला कर रही है; यूरोप और अमेरिका को हस्तक्षेप करना चाहिए और मोदी एवं भाजपा की वास्तविकता को उजागर करना चाहिए ; सितंबर 2024 में वाशिंगटन डीसी में उन्होंने कहा कि कांग्रेस आरक्षण खत्म करने के बारे तभी सोचेगी जब भारत में माहौल अधिक निष्पक्ष हो; इस साल अप्रैल में बोस्टन में कहा कि चुनाव आयोग (ईसी) समझौता कर चुका है।

सवाल यह है कि जब मोदी और भाजपा के खिलाफ लड़ाई यहां है, तो यह कलह दूसरे देश में क्यों ले जाई जाए? राहुल को पता होना चाहिए कि अमेरिकी पत्रकार, खासकर विंसेंट शीन, जिन्होंने अपने लेखों से हमारे लिए कई ऐतिहासिक दस्तावेज छोड़े, भारत यह देखने आए थे कि महात्मा गांधी ने शक्तिशाली ब्रिटिश राज के खिलाफ अहिंसा के हथियार, सत्याग्रह, को कैसे धार दी।

इसलिए यदि राहुल स्वदेश में लड़ाई पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो ज़्यादा कारगर रहता है। जैसा कि पिछले माह उन्होंने कर्नाटक के निर्वाचन क्षेत्र अलंद से 6,000 से ज़्यादा वोट अनियमित रूप से गायब किए जाने का मामला उठाया - इस जांच ने सब को चौंकाया। पिछले कुछ महीनों में, कांग्रेस सहित अन्य राजनीतिक दलों के अलावा जागरूक नागरिक समाज अपने यत्नों से बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर सर्वोच्च न्यायालय से चुनाव आयोग को फटकार लगवाने में कामयाब रहे। चुनाव आयोग को मजबूरन सुझाव मानने पड़े।

सार यह है कि राहुल गांधी के लिए समय कम होता जा रहा है। अगर वे चाहते हैं कि एकजुट विपक्ष भाजपा को उसके ही खेल में हरा दे, तो उन्हें अंशकालिक राजनेता बनना बंद करना होगा। हर हफ्ते भारत में बने रहना होगा और तगड़ी लड़ाई लड़नी होगी।

अगर राहुल मानते हैं कि वे किसी भी तरह से खास हैं, आनुवंशिकी और राजनीति से, पार्टी और देश का नेतृत्व करने को बने हैं, तो उन्हें संसद में और उसके बाहर अपनी दलीलों की धार तेज़ करने को रोज तैयारी करनी होगी। वे भाजपा की खासियत बन चुकी महत्वाकांक्षा से और अपनी पार्टी की गलतियों से सीखें। मसलन, बीते साल हरियाणा विधानसभा चुनाव में, वे स्थानीय कांग्रेस क्षत्रपों की आम आदमी पार्टी के साथ गठबंधन न करने की जिद के आगे झुक गए, हालांकि खुद वे गठजोड़ के पक्ष में थे; लेकिन तब विदेश में थे, और अपनी इच्छा पर अमल नहीं कर सके। बाकी इतिहास है। कांग्रेस अभी भी उबर नहीं पाई है।

प्रेरणा

जब संत तुकाराम की भक्ति ने खेतों को फिर से हरा-भरा कर दिया: एक चमत्कारी लीला की सत्य कथा

भक्ति यदि निष्कलंक हो, मन यदि निःस्वार्थ हो और आत्मा यदि प्रभु के चरणों में लीन हो, तो सृष्टि के नियम भी उस प्रेम के आगे झुक जाते हैं। यही सिद्ध किया था महान संत तुकाराम महाराज ने, जिनकी जीवनगाथा केवल भजनों की नहीं, बल्कि चमत्कारों की एक ऐसी श्रृंखला है जहाँ भक्त और भगवान एकाकार हो जाते हैं। संत तुकाराम महाराष्ट्र के देहू गाँव के निवासी थे। वे न तो राजदरबार के विद्वान थे, न किसी बड़े मंदिर के महंत – वे तो एक साधारण गृहस्थ थे, पर जिनके रोम-रोम में श्रीविट्ठल का नाम बसा हुआ था। दिन-रात भजन, कीर्तन, अभंग और प्रभुनाम में डूबे रहते थे। खेतों में काम करना, व्यापार करना या घर की चिंताएं करना उनके लिए उस प्रभु प्रेम के आगे तुच्छ लगता था। परंतु उनका यह परमार्थिक जीवन घर के लिए कई बार संकट बन जाता था। उनकी पत्नी जिजाई एक सीधी-सच्ची, परंतु व्यावहारिक स्त्री थीं। दो छोटे बच्चों की माँ होने के नाते उन्हें घर चलाने की चिंता थी। एक दिन उन्होंने तुकाराम से कहा, "तुका, तुम्हारी भक्ति तुम्हें मोक्ष दिला सकती है, पर हमारे बच्चों को अन्न कैसे मिलेगा? खेत पर जाकर कुछ मजदूरी करो, दो पैसे मिलेंगे तो अन्न आएगा।"

संत तुकाराम ने पत्नी की व्यथा को अपनी भक्ति का ही एक रूप समझा और सहर्ष खेत पर जाने को तैयार हो गए। प्रभु का नाम जपते हुए, उन्होंने दो रोटियाँ पोटली में बाँधी और खेत की ओर चल पड़े। जिस खेत में उन्हें काम करना था, उसका मालिक उन्हें दिनभर खेत की निगरानी के लिए नियुक्त करता था। लेकिन तुकाराम की भक्ति तो हर सांस में थी, उनका मन विट्ठल में इतना डूबा था कि खेत की पहरेदारी करते हुए भी उनकी आँखें प्रभु के नाम पर झुकी रहती थीं और होंठ हर क्षण "पांडुरंग पांडुरंग" कहते रहते थे। गांव का एक पंडा, जो तुकाराम की ख्याति और संतस्वरूप जीवन से ईर्ष्या करता था, यह देखकर जल उठा। उसने सोचा कि यदि तुकाराम खेत की रखवाली में असफल हो जाएं, तो उनका अपमान होगा और उन्हें खेत की नौकरी से निकाल दिया जाएगा। उसने चुपचाप कुछ सांडों को खेत में छोड़ दिया। वे सांड खेत में घुसे और खड़ी फसल को कुचलने लगे, मेड़ें तोड़ डालीं और क्यारियाँ रौंद दीं।

यह देखकर कोई और होता तो हाय-तौबा मचाता, मालिक को सफाई देता या पंडे पर आरोप लगाता। पर तुकाराम तो उस क्षण भी प्रभु स्मरण में लीन थे। उन्होंने न सांडों को रोका, न उन्हें भगाया, न कोई भय दिखाया। वे बस एक जगह खड़े हो गए, आँखें बंद कर लीं और अपने प्रभु को पुकारने लगे। उनके स्वर में पीड़ा नहीं थी, क्रोध नहीं था – केवल समर्पण था। उनके होंठों से भजन फूट रहा था –

"विठोबा माऊली, पांडुरंग,
माझे सर्वस्व तूच आहेस!"
(हे विट्ठल, हे माऊली! तू ही मेरा सब कुछ है।)

और तभी घटा वो चमत्कार – जैसे समय रुक गया हो, जैसे सृष्टि ने अपनी गति बदल दी हो। खेत की जो फसल सांडों ने नष्ट कर दी थी, वह अचानक फिर से खड़ी हो गई। टूटी हुई मेड़ें पहले से भी मजबूत बन गईं। हरियाली चारों ओर फैल गई, और उस खेत में इतना अन्न उग आया मानो धरती माँ ने स्वयं अपनी झोली खोल दी हो। गांव के लोग यह दृश्य देखकर स्तब्ध रह गए। जो पंडा तुकाराम की विफलता देखना चाहता था, वह यह चमत्कार देखकर भीतर तक कांप गया। उसकी आंखों में पश्चाताप के आँसू आ गए। वह दौड़कर तुकाराम के चरणों में गिर पड़ा और कहा – "मुझे क्षमा करें महाराज, मैंने अज्ञानवश अपराध किया। आपकी भक्ति को अपमानित करना चाहा, पर आपकी लीला देख मेरी आँखें खुल गईं।"

तुकाराम ने प्रेमपूर्वक उसका सिर सहलाया और कहा – "जो प्रभु के नाम में लीन हो जाता है, उसके शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। मेरी नहीं, यह विठ्ठल की लीला है।"

उस दिन से गांव में एक नई समझ फैल गई। लोग जान गए कि केवल मंदिर जाकर दिया जलाना ही भक्ति नहीं होती – सच्ची भक्ति तो वह है जो संकट में भी प्रभु को स्मरण करती है, जो तर्क और भय से परे केवल प्रेम में जीती है। संत तुकाराम की यह कथा हमें यह सिखाती है कि जब हम पूरे मन, प्राण और विश्वास से भगवान को पुकारते हैं, तो वे स्वयं आकर हमारी रक्षा करते हैं। भक्ति केवल शब्द नहीं है – वह वह शक्ति है जो सूखे खेतों को हरा कर देती है, पत्थर हृदयों को पिघला देती है और शत्रु को भी चरणों में झुका देती है।

नियति के प्रवाह संग बहने से ही जीवन उत्सव

भारतीय जीवन दर्शन की परंपरा में जीवन की नश्वरता के यथार्थ को गंभीरता के साथ स्वीकार किया गया है। हमें बताया गया है कि यदि जन्म और मृत्यु पर जब हमारा नियंत्रण नहीं है तो इसके बीच घटने वाले घटनाक्रम पर दंभ कैसा? संत कबीर भी देह की क्षण भंगुरता को कुछ इन शब्दों में अभिव्यक्त करते हैं—'पानी केरा बुदबुदा अस मानुस की जात/ देखत ही छिप जाएगा, ज्यों तारा परभात॥

अर्थात् मनुष्य का जीवन पानी के बुलबुले की तरह है जो पल भर में बनता और नष्ट हो जाता है। यह देह भी उसी तरह क्षणभंगुर है। एक दिन वैसे ही विलीन हो जाएगी, जैसे सुबह होते ही आकाश के तारे छिप जाते हैं। इस दोहे के माध्यम से कबीर यह संदेश देते हैं कि मनुष्य को अपने धन-दौलत और दूसरे भौतिक सुखों पर कभी अहंकार नहीं करना चाहिए। जब शरीर ही अपना नहीं है और एक दिन नष्ट हो जाना है तो सांसारिक वस्तुओं और उपलब्धियों पर गर्व करना मूर्खता है।

जीवन के अनुभवों से तपा हुआ निष्कर्ष है कि 'इंसान बहुत पैसा कमा व नाम कमा ले' ये सब बाहरी चीजें हैं। जो चीज बाहर से आती है वो छीनी जा सकती हैं। फिर उसका क्या गुमान? ये सोचकर सरलता आती है कि जो पाया है वो यहीं रह जाना है। विडंबना यही है कि इस शाश्वत को जानते हुए भी मनुष्य सदियों से अज्ञान की गलियों में भटक रहा है। 'नश्वरता' का बोध भारतीय चिंतन की गहन धारा में विद्यमान है। इसी चिंतन को भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन को इस प्रकार समझाया—'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि। तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-न्यन्यानि संयाति नवानि देही॥'

अर्थात् जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर दूसरे नए वस्त्रो को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीर को त्याग कर नए शरीर को ग्रहण करती है। यह श्लोक अस्तित्व की सबसे बड़ी सच्चाई है। जब इस शरीर को ही एक दिन पुराने वस्त्र की भांति त्यागना है, तो फिर इस वस्त्र पर लगे चमकीले सितारों-धन, कीर्ति, पद प्रतिष्ठा का क्या अहंकार करना। बाहरी उपलब्धियां तो क्षणभंगुर हैं जो शरीर रूपी वस्त्र के छूटने के साथ ही समाप्त हो जाती हैं। अगर नश्वरता का यह बोध हो जाए तो फिर अहंकार पिघल कर सहजता और सरलता में बदल जाता है। इस मायावी जगत में मनुष्य का सबसे बड़ा भ्रम 'मेरे' की भावना है। 'मेरा घर', 'मेरी गाड़ी', 'मेरा पद'—इस 'मेरा-तेरा' के भ्रम में फंसकर मनुष्य जीवनपर्यंत परेशान रहता है। 'ईशावास्योपनिषद्' (शुक्ल यजुर्वेद) का पहला ही मंत्र इस 'मेरे' के भ्रम को तोड़ता है—

'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥'

इस श्लोक में बताया गया है कि इस सम्पूर्ण जगत में जो कुछ भी चेतन या जड़ है, वह सब परमात्मा से ओत-प्रोत है। इसलिए मनुष्य को त्याग की भावना से उनका उपयोग और उपभोग करना चाहिए। किसी के धन की लालसा नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह वास्तव में किसी का नहीं। इस जगत में न तो कुछ अपना है और न ही स्थाई। यह मंत्र हमे 'स्वामी' होने के दंभ से मुक्त करता है और 'संरक्षक' होने की विनम्रता सिखाता है। सच्चाई यही है कि हम इस दुनिया में किसी वस्तु के मालिक नहीं, बस केवल संरक्षक हैं। यहां हमें कुछ समय के लिए कुछ चीजों का उपयोग करने की जिम्मेदारी दी गई है, अगर एक बार यह दृष्टि विकसित हो गई तो व्यक्ति संग्रह की प्रवृत्ति को छोड़कर त्याग करना सीख जाता है। फलस्वरूप उसके व्यवहार में अहंकार के स्थान पर विनम्रता, कृतज्ञता, सहजता और सरलता आ जाती है।

सहज और सरल जीवन जीने के लिए महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन में दो महत्वपूर्ण सूत्र दिए हैं—एक अष्टांग योग में यम के अंतर्गत आने वाला 'अपरिग्रह' है और दूसरा नियम के अंतर्गत 'संतोष'। अपरिग्रह का अर्थ है—आवश्यकता से अधिक धन संग्रह न करना। अपरिग्रह हमे सिखाता है कि हम वस्तुओं के प्रति आसक्ति न रखें। यह एक गहन आंतरिक भाव है जो 'मेरे' के भ्रम पर सीधी चोट करता है। संतोष से व्यक्ति वर्तमान में जो है, जैसा भी है उसमे संतुष्ट रहता है। पतंजलि कहते हैं—'संतोषादनुत्तमः सुखलाभ।' अर्थात् संतोष से परमसुख की प्राप्ति होती है।

अब चाहे गीता का निष्काम कर्म हो, उपनिषदों का त्याग भाव या पतंजलि का संतोष और अपरिग्रह। कुल मिलाकर देखें तो ये सभी सूत्र हमें एक ही दिशा में ले जाते हैं—'जीवन को अधिक सहजता से लेना।' यह गहन धार्मिक समझ अंग्रेजी की इस उक्ति में सिमट जाती है—'टेक लाइफ ईजी ऐज़ इट कम्स' अर्थात् जीवन को सहज भाव से जीना चाहिए। यानी वह जैसा भी है उसे उसी सहजता से स्वीकार कर लेना चाहिए। सहज भाव संतोष और स्वीकृति का शिखर होता है। इस भाव में न तो मन में कोई गांठ होती, न किसी से कोई शिकायत। बस जो भी हो रहा है उसके प्रति सहज साक्षी भाव होता है। हमें यह याद रखना चाहिए कि हम इस संसार के विराट नाटक के एक पात्र मात्र हैं, इसलिए नियति के प्रवाह के साथ बहना सीखें। जब हम जीवन को सहज भाव से लेने लगते हैं तो हर क्षण एक उत्सव होता है। फिर अंतर्मन सहजता, सरलता से भर उठता है।

अभियान

भगवान शंकर के श्रीमुख से प्रवाहित श्रीराम जन्म की अद्भुत और रहस्यमयी कथा

एक बार कैलाश पर्वत पर माता पार्वती अपने आराध्य प्रभु महादेव के समीप बैठी हुई थीं। वातावरण पूर्णतः शांत था, केवल मंद-मंद हिमालय की वायु बह रही थी और नीलकंठ शिव समाधि भाव में लीन थे। तभी माता पार्वती ने मधुर स्वर में कहा, "प्रभो! आप सर्वज्ञ हैं, त्रिकालदर्शी हैं। मुझे यह बताइए कि स्वयं भगवान श्रीहरि विष्णु ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के रूप में अवतार क्यों लिया? क्या कारण था कि परमब्रह्म, जो जन्म और मृत्यु से परे हैं, उन्होंने मनुष्य शरीर धारण किया?"

माता की यह विनम्र जिज्ञासा सुनकर महादेव का गंभीर मुखमंडल हल्की मुस्कान से खिल उठा। उन्होंने करुणा भरे स्वर में कहा — "देवि! तुम्हारा यह प्रश्न अत्यंत पवित्र है। जो भी श्रीराम जन्म के रहस्य को सुनता है, उसका हृदय निर्मल होकर भक्ति और ज्ञान से पूर्ण हो जाता है। श्रीराम के जन्म के एक नहीं, अनेक कारण हैं। वे इतने विचित्र और दिव्य हैं कि उनका वर्णन शब्दों की सीमाओं में बांधना असंभव है। 'राम जन्म के हेतु अनेका। परम विचित्र एक ते एका॥' — एक कारण को बताना तो मानो महासागर को एक कलश में भरने के समान है।"

महादेव ने आगे कहा, "हे भवानी! यद्यपि मैं सर्वज्ञ हूं, परंतु श्रीराम की लीला अनंत है। फिर भी तुम्हारे अनुरोध पर मैं उन दिव्य घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन करूँगा, जिनके कारण साक्षात् परमात्मा ने मनुष्य रूप में अवतार लेकर धर्म की स्थापना की।"

जय-विजय का अहंकार और सनकादि ऋषियों का श्राप

भगवान शंकर बोले — "हे देवी! श्रीहरि विष्णु के परम प्रिय दो द्वारपाल थे — जय और विजय। वे अपने स्वामी के नित्य सहचर, अत्यंत सामर्थ्यवान और तेजस्वी थे। परंतु समय के साथ उनमें एक सूक्ष्म अहंकार उत्पन्न हो गया। उन्हें लगा कि वे कोई साधारण सेवक नहीं, बल्कि स्वयं विष्णु के द्वार के स्वामी हैं। इस अहंकार ने उनके मन में यह भ्रम भर दिया कि वे जिसे चाहें, उसे भगवान से मिलने से रोक सकते हैं।"

अहंकार जब किसी के भीतर आता है, तो विवेक नष्ट हो जाता है। वही हुआ। एक दिन ब्रह्मा के मानस पुत्र सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार — ये चारों बालक स्वरूप ऋषि वैकुण्ठ के दर्शन हेतु आए। वे भगवान के प्रेम में इतने तल्लीन थे कि उन्हें यह भी ध्यान नहीं रहा कि द्वार पर कोई रक्षक खड़ा है। वे सीधे प्रभु के दर्शन के लिए भीतर प्रवेश करने लगे।

जय और विजय ने जब देखा कि ये चारों बिना अनुमति भीतर जा रहे हैं, तो उनके भीतर का अहंकार ज्वालामुखी की तरह फूट पड़ा। वे गर्जन करते हुए बोले, "ठहरो! क्या तुम नहीं जानते कि यह विष्णु का निजी क्षेत्र है? यहाँ कोई ऐसे ही नहीं जा सकता!"

सनकादि ऋषि शांत स्वर में मुस्कराए।

उनके मुखमंडल पर कोई क्रोध नहीं था। वे बोले, "बेटा, वैकुण्ठ में कोई बाहर या भीतर नहीं होता। यह वह लोक है जहाँ भेद समाप्त हो जाते हैं। यहाँ कोई द्वारपाल भी वैकुण्ठवासी होता है, कोई बाहर का नहीं।"

यह सुनते ही जय और विजय के अहंकार को और चोट पहुँची। उन्होंने कटु वचन कहे, और अपमानजनक व्यवहार किया। सनकादि ऋषि अब मौन रहे, परंतु जब उन्होंने देखा कि ये द्वारपाल अपने स्वामी के प्रेम को भी तुच्छ मान रहे हैं, तब उन्होंने गंभीर स्वर में कहा, "हे मूर्खो! तुम्हारे भीतर अब कोई दैवी भाव नहीं रहा। तुम राक्षस हो। अतः जाओ, उसी रूप में मृत्युलोक में जन्म लो और अपने कर्मों का फल भोगो।"

उनके वचन के साथ ही आकाश में बिजली-सी चमकी। जय और विजय का तेज म्लान पड़ गया। वे कंपित स्वर में बोले, "हे ऋषिवर! हमसे भूल हो गई। कृपा करें। हमें ऐसा कठोर श्राप न दें।"

तब भगवान विष्णु स्वयं प्रकट हुए। उन्होंने सनकादि को प्रणाम किया और कहा, "महर्षिगण, मेरे इन सेवकों ने अहंकारवश अपराध किया है। किंतु यह भी मेरी लीला का एक अंग है। जो होना है, वह तुम्हारे माध्यम से ही पूर्ण हो रहा है।"

फिर उन्होंने जय और विजय से कहा, "हे मेरे सेवकों! तुम्हें अब दो विकल्प मिलते हैं। या तो सात जन्म तक भक्त रूप में मेरे दर्शन से वंचित रहो, या तीन जन्म तक मेरे विरोधी बनकर शीघ्र ही मोक्ष प्राप्त करो।"

जय और विजय बोले, "प्रभु! आपके विरोध में जन्म लेना तो कठिन है, परंतु आपके दर्शन से सात जन्म तक दूर रहना असह्य है। हमें वह मार्ग स्वीकार है जिसमें शीघ्र ही पुनः आपकी सेवा का अवसर मिले।"

भगवान विष्णु मुस्कराए — "तथास्तु। अब तुम राक्षस रूप में जन्म लेकर मेरे ही हाथों मोक्ष पाओगे। यह लीला युगों तक याद की जाएगी।"

और फिर वही जय और विजय पहले जन्म में हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु बने, जिन्हें वराह और नरसिंह रूप में भगवान ने मुक्त किया। दूसरे जन्म में वे रावण और कुम्भकर्ण बने, जहाँ स्वयं भगवान श्रीहरि ने श्रीराम रूप में अवतार लेकर उनका उद्धार किया।

श्रीराम जन्म का दिव्य रहस्य

महादेव बोले — "हे भवानी! यही वह कारण था जिसके लिए परमात्मा ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के रूप में अवतार लिया। परंतु यह केवल एक कारण नहीं था। श्रीराम का अवतरण धर्म की पुनः स्थापना, मर्यादा के संरक्षण, और मानवता को आदर्श जीवन का मार्ग दिखाने के लिए भी था। श्रीराम केवल दशरथ पुत्र नहीं थे; वे सत्य, प्रेम, और कर्तव्य के जीवंत स्वरूप थे। वे यह दिखाने आए कि ईश्वर जब मनुष्य रूप में आता है, तो वह भी अपने ही नियमों का पालन करता है।"

शिव के श्रीमुख से बहती यह कथा इतनी मधुर थी कि पार्वती का हृदय भक्ति से भर उठा। उन्होंने आँसुओं से कहा — "प्रभो! धन्य हैं वे माता कौशल्या, जिनकी गोद में स्वयं भगवान ने बाल रूप धारण किया। धन्य है वह अयोध्या, जिसने श्रीराम का जन्म देखा। धन्य हैं वे युग, जिन्होंने राम नाम का उच्चारण किया।"

महादेव ने कहा, "देवि, जो इस कथा को श्रद्धा और एकाग्रता से सुनता है, वह जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाता है। उसके हृदय में 'राम' नाम का प्रकाश प्रकट होता है। यही वह नाम है, जिसके उच्चारण से मैं स्वयं भी आनंदित हो उठता हूँ — राम नाम मन मोहक मोती, जो जपै सो पावै शांति अति होती।"

और उस क्षण, कैलाश की वायु में "जय श्रीराम" का पवित्र स्वर गूंज उठा। ऐसा लगा जैसे स्वयं आकाश, धरती और दिशाएँ भी उस दिव्य कथा के रसनिष्ठ सुरों में झूम उठीं। महादेव की आँखों से भक्ति के आँसू झरने लगे, और पार्वती नतमस्तक हो गईं — क्योंकि उन्होंने समझ लिया था कि राम केवल एक नाम नहीं, बल्कि स्वयं परमब्रह्म का वह रूप है, जो करुणा और मर्यादा का संगम बनकर सृष्टि को दिशा देता है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

‘विकसित उत्तर प्रदेश @2047’ अभियान में जनता की भागीदारी रिकॉर्ड तोड़ रही है

(जीएनएस)। लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2047 तक प्रदेश को ‘समर्थ और विकसित’ बनाने के लिए चलाया जा रहा ‘समर्थ उत्तर प्रदेश-विकसित उत्तर प्रदेश @2047 अभियान’ जनसहभागिता के क्षेत्र में नया कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। अभियान के तहत अब तक 24.5 लाख से अधिक सुझाव प्राप्त हो चुके हैं, जो दर्शाता है कि प्रदेश की जनता अपने भविष्य के प्रति सजग, सक्रिय और जिम्मेदार है।

सरकार द्वारा नामित नोडल अधिकारियों और प्रबुद्ध नागरिकों की टीमों ने प्रदेश के 75 जिलों में जाकर छात्रों, शिक्षकों, उद्यमियों, किसानों, श्रमिकों, स्वयंसेवी संस्थाओं और आम नागरिकों के बीच संवाद स्थापित किया। इन बैठकों में बीते आठ वर्षों की विकास यात्रा साझा करते हुए आगामी वर्षों की योजनाओं के लिए सुझाव आमंत्रित किए गए।

ग्रामीण युवा सबसे आगे

सरकारी पोर्टल samarthuttarpradesh.up.gov.in पर प्राप्त सुझावों का वर्गीकरण इस प्रकार है: कुल सुझाव 24.5 लाख हैं, जिनमें लगभग 19 लाख ग्रामीण क्षेत्रों से और 5.5 लाख शहरी क्षेत्रों से आए हैं। आयु वर्ग के अनुसार 31 वर्ष से कम आयु के लोगों ने 11.5 लाख, 31–60 वर्ष आयु समूह के लोगों ने 11.5 लाख और 60 वर्ष से अधिक वरिष्ठ नागरिकों ने लगभग 1.2 लाख सुझाव दिए। यह आंकड़ा दर्शाता है कि युवाओं और ग्रामीण समुदायों ने अभियान में विशेष सक्रियता दिखाई है।

शिक्षा क्षेत्र में सबसे अधिक रुचि

सुझावों का क्षेत्रवार विश्लेषण बताता है कि शिक्षा क्षेत्र सबसे आगे रहा। इसके बाद कृषि, नगरीय व ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य व समाज कल्याण और आईटी, उद्योग एवं सुरक्षा जैसे क्षेत्र शामिल हैं। विशेष रूप से शिक्षा क्षेत्र में 7.5 लाख, कृषि में 6 लाख और नगरीय व ग्रामीण विकास में 4 लाख से अधिक सुझाव प्राप्त हुए।

जिलेवार भागीदारी

सुझाव देने में संभल, महाराजगंज, जौनपुर, सोनभद्र और हरदोई के नागरिक सबसे आगे रहे, जबकि फिरोजाबाद, महोबा, ललितपुर, इटावा और बुलंदशहर से अपेक्षाकृत कम सुझाव प्राप्त हुए।

नागरिकों के ठोस और व्यावहारिक सुझाव

आगरा के राकेश कुमार सोनी ने सुझाव दिया कि यदि जनप्रतिनिधियों और सरकारी कर्मचारियों के बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ें, तो शिक्षा व्यवस्था स्वतः मजबूत होगी। उन्होंने निजी स्कूलों की मनमानी रोकने और पाठ्यपुस्तकें समान करने की आवश्यकता भी बताई।

सीतापुर के योगेश ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, इंटरनेट और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने से विकास की मुख्यधारा सशक्त होगी। उन्होंने हर गाँव में सड़क, बिजली और इंटरनेट जैसी बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता को अनिवार्य बताया।

जनता के सुझावों से बनेगी विकास की नीति

राज्य सरकार का मानना है कि यह अभियान न केवल जन भागीदारी का उदाहरण है, बल्कि इससे प्राप्त सुझाव आने वाले वर्षों की नीति निर्माण की आधारशिला बनेंगे। सरकार का उद्देश्य है कि वर्ष 2047 तक उत्तर प्रदेश को आत्मनिर्भर, तकनीकी रूप से सशक्त, सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण और समावेशी विकास मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

भीलवाड़ा में नाबालिग प्रेमिका की शादी पर नाराज युवक मोबाइल टावर पर चढ़ा, दो घंटे बाद उतरा

(जीएनएस)। भीलवाड़ा। राजस्थान के भीलवाड़ा शहर के सुभाष नगर थाना क्षेत्र में एक 22 वर्षीय युवक गोविंद अपनी नाबालिग प्रेमिका की जबरन शादी से नाराज होकर मोबाइल टावर पर चढ़ गया। युवक ने लव मैरिज की मांग को लेकर सोशल मीडिया पर वीडियो रील भी पोस्ट की और धमकी दी कि अगर उसकी बात नहीं मानी गई तो वह कूद जाएगा।

मौके पर बड़ी संख्या में लोग जमा हो गए। पुलिस को सूचना मिलने पर तुरंत पहुंची और युवक को टावर से उतरने के लिए समझाइश शुरू की। गोविंद ने इंस्टाग्राम रील में अपने पिता और प्रेमिका के परिवार का नाम लेते हुए कहा कि थाने में शिकायत करने के बावजूद कोई सुनवाई नहीं हुई और यदि वह कूद गया तो उसकी मौत की जिम्मेदारी लड़की के परिवार की होगी। दो घंटे तक टावर पर रहने के बाद पुलिस और परिवार की समझाइश के बाद युवक नीचे उतरा। सुभाष नगर थाना पुलिस ने उसे हिरासत में लिया और इस मामले में कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी गई है। इस घटना से इलाके में हलचल मच गई और स्थानीय लोग घटनास्थल पर इकट्ठा हुए। लड़की के परिवार ने कहा कि उन्हें इस मामले से कोई लेना-देना नहीं है और लड़के के खिलाफ कानून के तहत कार्रवाई की जानी चाहिए।

भारत और ब्रिटेन ने हिंद महासागर में आठ दिवसीय बड़ा युद्धाभ्यास शुरू किया

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत और ब्रिटेन की नौसेनाओं ने हिंद महासागर में आठ दिवसीय संयुक्त युद्धाभ्यास शुरू कर दिया है, जिसका उद्देश्य दोनों देशों के रक्षा और रणनीतिक संबंधों को और मजबूती प्रदान करना है। ब्रिटेन के एचएमएस प्रिंस ऑफ वेल्स विमानवाहक पोत के नेतृत्व में कैरियर स्ट्राइक ग्रुप (CSG) को कोंकण में तैनात किया गया है।

भारतीय नौसेना ने बताया कि यह अभ्यास नौवहन की स्वतंत्रता और क्षेत्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने की साझा प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। यह भारत-ब्रिटेन विजन 2035 में उल्लिखित व्यापक रणनीतिक साझेदारी का भी उदाहरण है। अभ्यास के दौरान दोनों नौसेनाओं के जहाज, विमानों और पनडुब्बियों के बीच संयुक्त समुद्री और हवाई संचालन का अभ्यास किया जाएगा।

ब्रिटेन में भारतीय उच्चायुक्त लिंडी कैमरून ने कहा, ‘‘भारत और ब्रिटेन हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्वतंत्र और खुले समुद्र की दिशा में विश्वास रखते हैं। यह अभ्यास नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था बनाए रखने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है और भविष्य के सहयोग के लिए मजबूत आधार तैयार करेगा।’’

विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह के अभ्यास न केवल दोनों देशों की नौसैनिक क्षमताओं को बढ़ाते हैं, बल्कि क्षेत्रीय शांति और सुरक्षा सुनिश्चित करने में भी मदद करते हैं। इससे भारत-ब्रिटेन के रक्षा और रणनीतिक संबंधों को नई दिशा मिलेगी और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सामरिक संतुलन मजबूत होगा।

‘10 साल का ब्राह्मण, 100 क्षत्रिय का पिता’: स्वामी प्रसाद मौर्य ने योगी सरकार पर बोला हमला

(जीएनएस)। अमेठी। पूर्व कैबिनेट मंत्री और अपनी जनता पार्टी (एजेपी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी प्रसाद मौर्य ने रविवार को अमेठी में आयोजित जनसभा के दौरान विवादास्पद बयान देते हुए उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार पर तीखा हमला बोला। मंच से मौर्य ने कहा, “संस्कृत में लिखा है कि 10 साल का ब्राह्मण, 100 साल के क्षत्रिय का पिता होता है।” इस बयान ने राजनीतिक और सामाजिक हलकों में हलचल पैदा कर दी है। उन्होंने सभा में एक श्लोक का हवाला देते हुए ब्राह्मणों को उच्चतर बताते हुए कहा कि यह जातीय असमानता का प्रतीक है और अब समय आ गया है कि इस मानसिकता को चुनौती दी जाए।

स्वामी प्रसाद मौर्य ने उत्तर प्रदेश में कानून-व्यवस्था की स्थिति को लेकर योगी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि सपा नेता गायत्री प्रसाद प्रजापति पर जेल में हुए हमले जैसी घटनाएं प्रदेश में जंगलराज की स्थिति दिखाती हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार ‘हिंदू-मुस्लिम, मंदिर-मस्जिद’ जैसे भावनात्मक मुद्दों को जनता का ध्यान भटकाने के लिए बार-बार उठाती है, जबकि आम जनता के वास्तविक मुद्दों पर ध्यान नहीं दिया जा रहा। मौर्य ने अपनी पार्टी की आगामी चुनावी रणनीति का भी एलान किया। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी 2027 के विधानसभा चुनाव में प्रदेश की सभी सीटों पर चुनाव लड़ेगी। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि अगर भाजपा को सत्ता से हटाने के लिए किसी दल के साथ गठबंधन करना पड़ा तो वे इसके लिए तैयार हैं। मौर्य ने धर्म के नाम पर राजनीति करने वालों को भी आड़े हाथों लिया और कहा कि देश भारतीय संविधान के नियमों से चलेगा, किसी ढोंगी बाबा के कहने से नहीं। उन्होंने यह भी याद दिलाया कि देश को आज़ाद कराने में सभी धर्मों और जातियों ने योगदान दिया, लेकिन कुछ लोग धर्म का चोला पहनकर देश को गुमराह कर रहे हैं। स्वामी प्रसाद मौर्य का राजनीतिक सफर विवादों से भरा रहा है। वह पांच बार विधायक, विपक्ष के नेता और कैबिनेट मंत्री रह चुके हैं। 2022 में उन्होंने भाजपा छोड़कर सपा का दामन थामा और फाजिलनगर से विधानसभा चुनाव लड़ा, लेकिन हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद उन्होंने सपा भी छोड़ दी और राष्ट्रीय शोषित समाज पार्टी (आरएसएसपी) की स्थापना की। हाल ही में उन्होंने अपनी जनता पार्टी (एजेपी) का गठन किया। 2024 के लोकसभा चुनाव में वह कुशीनगर से आरएसएसपी के टिकट पर मैदान में उतरे, लेकिन चुनाव परिणाम उनके पक्ष में नहीं रहे। इस जनसभा और उनके बयान ने उत्तर प्रदेश की राजनीतिक गलियारे में चर्चा का नया विषय पैदा कर दिया है। आगामी महीनों में 2027 विधानसभा चुनाव के दृष्टिगत मौर्य की गतिविधियां और बयान प्रदेश की सियासी रणनीतियों पर असर डाल सकते हैं।

सूरत से अगवा बच्चा 72 घंटे बाद मिला — 1000 सीसीटीवी कैमरों की पड़ताल से पुलिस ने वलसाड में खोज निकाला मासूम

(जीएनएस)। सूरत। गुजरात के सूरत शहर में एक दिल दहला देने वाली घटना के बाद पुलिस ने तीन दिन की अथक मेहनत से एक मासूम बच्चे को सकुशल बरामद कर लिया। यह मामला उस समय सामने आया जब एक महिला ने फुटपाथ से खेलते हुए दो साल के बच्चे को अगवा कर लिया था। घटना के बाद पूरे शहर में सनसनी फैल गई और पुलिस ने बच्चे को ढूंढने के लिए व्यापक सर्च ऑपरेशन शुरू किया, जो लगातार तीन दिन तक चला। पुलिस के अनुसार, यह घटना सूरत के उधना इलाके की है, जहां शुक्रवार की रात एक मजदूर परिवार का बच्चा फुटपाथ पर खेलते हुए अचानक लापता हो गया। परिवार ने तुरंत पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने बच्चे के अपहरण की आशंका जताते हुए जांच शुरू की और शहर के प्रमुख मार्गों, रेलवे स्टेशन, बस डिपो और बाजार क्षेत्रों के करीब 1000 से अधिक सीसीटीवी फुटेज खंगाले। इन वीडियो में पुलिस को एक संदिग्ध महिला दिखाई दी जो बच्चे को गोद में लेकर बस स्टैंड की ओर जाती नजर आई। जांच टीम ने फुटेज के आधार पर महिला की पहचान की और यह पता लगाया कि वह बस से वलसाड की दिशा में गई थी। इसके बाद सूरत पुलिस की एक विशेष टीम वलसाड रवाना हुई और स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर इलाके में सघन तलाशी अभियान चलाया। लगातार 72 घंटे के अथक प्रयास के बाद सोमवार देर रात पुलिस ने वलसाड के परेरा इलाके में एक झोपड़ी से बच्चे को सकुशल बरामद कर लिया। महिला को भी वहीं से गिरफ्तार कर लिया गया। पूछताछ में उसने बताया कि उसके कोई संतान नहीं थी और उसने बच्चे को अपने पास रखने की नीयत से उठाया था।

सूरत पुलिस आयुक्त ने इस मामले में शामिल अधिकारियों की सराहना करते हुए कहा कि यह “एक उत्कृष्ट टीमवर्क और तकनीक के संयोजन से हासिल की गई सफलता” है। उन्होंने बताया कि पुलिस ने बच्चे की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी और हर संभव संसाधन जुटाकर तीन दिन के भीतर उसे वापस लाने में सफलता पाई। बच्चे को मेडिकल जांच के बाद उसके माता-पिता को सौंप दिया गया। जब पुलिस ने बच्चे को उसके परिवार के हवाले किया, तो वहां मौजूद लोगों की आंखों में खुशी के आँसू थे। बच्चे की माँ ने पुलिस को धन्यवाद देते हुए कहा कि “भगवान के बाद पुलिस ने मेरा बेटा लौटाया है।” यह घटना एक बार फिर यह साबित करती है कि आधुनिक तकनीक, जैसे कि सीसीटीवी नेटवर्क और डाटा एनालिसिस, अब अपराधों की जाँच में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। सूरत पुलिस के इस त्वरित और मानवीय प्रयास ने न केवल एक मासूम की जान बचाई बल्कि समाज में पुलिस के प्रति विश्वास को और भी मजबूत कर दिया है।

करसनभाई के एक विचार ने रची भारतीय उद्योग में एक महान विरासत, उनकी यात्रा VGRC में देगी उद्यमियों को प्रेरणा

- कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित करसनभाई पटेल
- बेहतरीन गुणवत्ता और किफ़ायती मूल्य का संगम बनाने वाली ‘निरमा’ ने बनाई भारतीय उपभोक्ताओं के बीच नई पहचान
- उद्योग के साथ-साथ दूरदर्शी शिक्षाविद् और निष्ठावान समाजसेवी भी थे करसनभाई पटेल
- मंडाली और छत्राल में स्थापित विशाल औद्योगिक केंद्रों से स्थानीय विकास और रोजगार में दिया उत्कृष्ट योगदान

(जीएनएस)। गांधीनगर, : उत्तर गुजरात के एक साधारण किसान परिवार से निकले एक युवक ने वह कर दिखाया, जिसे आज दुनिया “भारतीय उद्यमशीलता की मिसाल” के रूप में पहचानती है। श्री करसनभाई पटेल एक ऐसे विज्ञान स्नातक जिन्होंने अपने घर से शुरू किया वह सफर, जो आज अरबों डॉलर के औद्योगिक साम्राज्य तक पहुँचा।

रूपपुर से अहमदाबाद तक: एक तकनीशियन से उद्यमी तक का सफर

1945 में उत्तर गुजरात के रूपपुर गाँव में जन्मे करसनभाई पटेल ने रसायन विज्ञान में बी.एससी. की डिग्री हासिल की। अहमदाबाद के न्यू कॉटन मिल्स में लैब तकनीशियन के रूप में नौकरी करते हुए उन्होंने 1969 में अपने घर से ही डिटर्जेंट पाउडर बनाना शुरू किया। सुबह दफ़्तर जाने से पहले वे अपनी साइकिल पर शहर में घूमते और अपने हाथों से बनाए डिटर्जेंट के पैकेट घर-घर बेचते। उन्होंने इस उत्पाद का नाम अपनी स्वर्गीय पुत्री के नाम “निरमा”, पर रखा जो आगे चलकर भारत की सबसे लोकप्रिय FMCG ब्रांडों में से एक बनी।

उत्तर गुजरात में औद्योगिक परिवर्तन का सूत्रपात

श्री करसनभाई पटेल ने अपनी सफलता को केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं बनाया, बल्कि इसे सामाजिक विकास का माध्यम बनाया। उन्होंने मंडाली और छत्राल जैसे उत्तर गुजरात के इलाकों में विशाल औद्योगिक केंद्र स्थापित किए। इन इकाइयों ने हज़ारों स्थानीय युवाओं को स्थायी रोजगार दिया और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को फलने-फूलने का अवसर दिया।

‘निरमा’ ने उस दौर में भारतीय उपभोक्ताओं को एक ऐसा विकल्प दिया, जो गुणवत्ता और किफ़ायत का अद्भुत संगम था। जहाँ विदेशी ब्रांड महंगे थे, वहीं ‘निरमा’ ने साधारण परिवारों को सुलभ मूल्य पर बेहतरीन गुणवत्ता उपलब्ध कराई। यही सादगी और भरोसा उसका सबसे बड़ा विज्ञापन बन गया। लोगों की जुबान से निकली सिफ़ारिशें ही उसके प्रचार का माध्यम बनीं। देखते ही देखते ‘निरमा’ हर घर की जरूरत, हर मां की पसंद और हर भारतीय की पहचान बन गया। इस अपार सफलता के बाद करसनभाई पटेल ने अपनी सरकारी नौकरी छोड़ दी और पूरे समर्पण के साथ अपने सपने ‘‘निरमा’’ को राष्ट्रव्यापी उद्योग का स्वरूप देने के लिए जुट गए।

शिक्षा के माध्यम से समाज निर्माण का दूरदर्शी संकल्प

करसनभाई पटेल का मानना था कि किसी भी समाज की सच्ची समृद्धि उसकी शिक्षा से ही संभव है। इसी भावना के साथ उन्होंने निरमा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन की स्थापना की ताकि ज्ञान, अनुसंधान और नवाचार के माध्यम से नई पीढ़ी को सशक्त बनाया जा सके। इस पहल के अंतर्गत निरमा यूनिवर्सिटी और निरमा विद्याविहार जैसे प्रतिष्ठित संस्थान स्थापित हुए, जो आज इंजीनियरिंग, प्रबंधन, विधि, डिज़ाइन, फार्मेसी और वास्तुकला जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्टता के प्रतीक हैं। कर्सनभाई पटेल ने यह सिद्ध कर दिखाया कि बिना घर छोड़े और बिना सपनों को छोड़े भी विश्वस्तरीय शिक्षा अपने ही क्षेत्र में उपलब्ध कराई जा सकती है।

करसनभाई पटेल: एक प्रेरक उद्यमी, एक दूरदर्शी शिक्षाविद्, एक निष्ठावान समाजसेवी

करसनभाई पटेल ने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि जब समर्पण, दृष्टि और कर्म एक साथ चलते हैं, तो सफलता केवल व्यक्ति की नहीं, समाज की भी होती है। उद्योग, शिक्षा और समाज तीनों क्षेत्रों में उनके असाधारण योगदान को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है। 1990 में उन्हें उद्योग रत्न पुरस्कार, 1998 में गुजरात बिज़नेसमैन अवॉर्ड, 2006 में अर्न्स्ट एंड यंग लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड, 2009 में सरदार वल्लभभाई पटेल विश्व प्रतिभा अवॉर्ड और 2010 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अलावा, फ्लोरिडा अटलांटिक यूनिवर्सिटी (यूएसए) और देवी अहिल्या विश्वविद्यालय (इंदौर) ने भी उन्हें मानद उपाधियाँ प्रदान कर उनके बहुआयामी योगदान को सम्मानित किया है।

आगमी वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस औद्योगिक क्षेत्र के लिए बनेगी प्रेरणा और नवाचार की नई दिशा

आगामी 9-10 अक्टूबर को उत्तर गुजरात के मेहसाणा में आयोजित होने वाले वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (VGRC) उत्तर गुजरात के ऐसे ही दूरदर्शी उद्यमियों की प्रेरक यात्राओं को नमन करने का अवसर है जिन्होंने स्थानीय संसाधनों, नवाचार और अटूट संकल्प के बल पर वैश्विक पहचान बनाई। साथ ही, यह आयोजन न केवल उत्तर गुजरात की उद्यमशीलता भावना का उत्सव है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए यह प्रेरक संदेश भी देता है कि जब एक विचार कर्म और निष्ठा से जुड़ता है, तो वह सिर्फ व्यवसाय नहीं, बल्कि परिवर्तन की कहानी बन जाता है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में घुमंतू और विमुक्त जातियों का राज्य स्तरीय महासम्मेलन

ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद डॉ. के. लक्ष्मण, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्रीमती भानुबेन बाबरिया आदि की उपस्थिति

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने रविवार को अहमदाबाद में आयोजित घुमंतू और विमुक्त जातियों के राज्य स्तरीय महासम्मेलन में साफ तौर पर कहा कि जिनको कोई पूछता भी नहीं था, ऐसे अंत्योदय, गरीब और वंचितों को मोदी साहब ने पूजा है।

डीएनटी फाउंडेशन की ओर से आयोजित इस महासम्मेलन राज्य भर से घुमंतू और विमुक्त जातियों के लोग उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि अतीत में यह सवाल था कि घुमंतू और विमुक्त जाति का समाज आगे बढ़ेगा तो आखिर कब बढ़ेगा, लेकिन हमें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जैसा सक्षम नेतृत्व मिला और प्रत्येक व्यक्ति एवं समाज को साथ रखकर चलने से ‘सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास’ का ध्येय साकार हुआ है।

उन्होंने कहा कि छोटे से छोटे व्यक्ति के बारे में विचार कर सरकारी योजनाएं और नीतियां बनाई गई हैं और विकसित भारत के निर्माण के लिए हाशिये पर खड़े और मध्यम वर्ग के लोगों को केंद्र में रखकर उन्हें विकास के साथ जोड़ा है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने घुमंतू और विमुक्त जातियों के बच्चों को शिक्षा प्रदान करने पर बल देते हुए कहा कि सरकार ने आपके बेटे-बेटियां पढ़-लिखकर आगे बढ़ सकें, इसके लिए बहुत सारी योजनाएं बनाई हैं। पिछले तीन वर्षों में घुमंतू और विमुक्त जाति के 27 लाख से अधिक लाभार्थियों को 297 करोड़ रुपए की छात्रवृत्ति सहायता और 8448 लाभार्थियों को 105 करोड़ रुपए की ऋण सहायता प्रदान की गई है।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में देश और दुनिया के साथ-साथ समय की जो मांग है, उसके मुताबिक बच्चे कदम से कदम मिलाकर पढ़-लिखकर कर आगे बढ़ रहे हैं, इसमें जहां भी आवश्यकता होगी, वहां सरकार आपके साथ खड़े रहने को तैयार है।

उन्होंने इस समाज की बहनों और माताओं को भी स्वयं सहायता समूह जैसी योजनाओं का लाभ उठाकर आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हम विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, तब आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए सभी समाजों को भी इसमें जुड़ना होगा।

विकसित भारत के लिए विकसित गुजरात बनाने हेतु सरकार विभिन्न कल्याण योजनाओं में संतृप्तिकरण यानी सैचुरेशन के दृष्टिकोण से साथ खड़ी है ताकि समाज का छोटे से छोटा व्यक्ति भी मुख्यधारा में शामिल हो सके।

उन्होंने आत्मनिर्भर भारत के लिए वोकल फॉर लोकल और स्वदेशी वस्तुओं के अधिक से अधिक उपयोग का आह्वान करते हुए कहा कि जीएसटी सुधारों के कारण जनजीवन को बहुत लाभ हो रहा है।

इस संदर्भ में मुख्यमंत्री ने आने वाले त्योहारी सीजन में स्वदेशी वस्तुओं की खरीद-बिक्री को बढ़ावा देकर आत्मनिर्भर और विकसित भारत के संकल्प को गति देने का अनुरोध किया।

इस अवसर पर सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्रीमती भानुबेन बाबरिया ने कहा कि तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने घुमंतू और विमुक्त जाति के लोगों को स्थायी ठिकाना उपलब्ध कराने के उद्देश्य से उन्हें ‘खुद का घर’ देने की शुरुआत की थी। उन्होंने आगे कहा कि 28 घुमंतू और 12 विमुक्त जातियों सहित कुल 40 जातियां सामाजिक और शैक्षणिक रूप से बहुत अधिक पिछड़ी हैं, तब राज्य सरकार ने 2015 में ऐसे लोगों के लिए निगम का गठन किया था।

श्रीमती बाबरिया ने कहा कि राज्य सरकार ने घुमंतू और विमुक्त जाति के बच्चों की शिक्षा की चिंता कर उन्हें स्कॉलरशिप और अन्य शैक्षणिक सहायता प्रदान करने के प्रयास किए हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल अंतिम छोर के लोगों तक विकास का लाभ पहुंचाने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री ने ऐसी व्यवस्था की है कि स्ट्रीट वेंडर्स यानी पथ विक्रेता को अपने व्यवसाय के लिए बैंक से आसान तरीके से ऋण मिल सके।

इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों द्वारा पद्मश्री भानुभाई चितारा का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर राज्यसभा सांसद और भाजपा ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. के. लक्ष्मण, राज्यसभा सांसद और प्रदेश भाजपा ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष श्री मयंक नायक, अहमदाबाद की महापौर श्रीमती प्रतिभा जैन, शहर भाजपा अध्यक्ष श्री पेरकभाई शाह, श्री भरतभाई पटणी, श्री प्रवीणभाई धुगे, श्री सागरभाई रायका और घुमंतू एवं विमुक्त जातियों के राज्य भर से आए अग्रणियों सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

> प्रधानमंत्री ने घुमंतू और विमुक्त जातियों के लिए अनेक कल्याण योजनाओं के सफल क्रियान्वयन से इस बात को साकार किया है कि ‘जिनको कोई नहीं पूछता, उनको मोदी पूजता है’
>
> -मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

चीनी सहकारी मिलों की नई दिशा: महाराष्ट्र के किसानों को अमित शाह ने दिया भरोसा

(जीएनएस)। अहमदनगर। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने अहमदनगर जिले के डॉ. विट्ठलराव विखे पाटिल सहकारी चीनी कारखाने की क्षमता विस्तार परियोजना का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने महाराष्ट्र के किसानों को भारी बारिश और बाढ़ से हुए नुकसान की भरपाई के लिए केंद्र सरकार की ओर से हर संभव मदद देने का भरोसा दिलाया।

अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत के चीनी सहकारी क्षेत्र की तस्वीर पूरी तरह बदल गई है और महाराष्ट्र में सहकारी मिलों की स्थिति पहले से बेहतर हुई है। उन्होंने बताया कि हाल ही में हुई बारिश से लगभग 60 लाख हेक्टेयर से अधिक कृषि भूमि प्रभावित हुई है और सरकार इसके लिए तुरंत सहायता प्रदान करेगी।

केंद्र और राज्य सरकारों ने राहत कार्यों में तेजी लाई है। वित्त वर्ष 2024-25 में केंद्र सरकार ने महाराष्ट्र को 3132 करोड़ रुपये की सहायता प्रदान की, जिसमें से 1631 करोड़ रुपये अप्रैल में प्रधानमंत्री द्वारा जारी किए गए थे। राज्य सरकार ने 2215 करोड़ रुपये का राहत कोष बनाया, जिससे 31 लाख से अधिक किसानों को फायदा होगा। इसके अलावा किसानों को 10 हजार रुपये नकद और 35 किलो अनाज भी मुहैया कराया जा रहा है, साथ ही कर्जमाफी की वसूली पर भी रोक लगाई गई है। अमित शाह ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार मिलकर किसानों की समस्याओं का समाधान करेंगे और विस्तृत रिपोर्ट मिलने के बाद किसी भी प्रकार की देरी नहीं की जाएगी। उन्होंने यह भी बताया कि राज्य के विधायकों ने एक महीने का वेतन राहत कोष में दान किया है और राधाकृष्ण विखे पाटिल की फैक्ट्री को भी सहायता प्रदान की जाएगी। केंद्रीय मंत्री ने किसानों से भरोसा जताया कि महाराष्ट्र में केंद्र और राज्य सरकार मिलकर उनकी हर समस्या का समाधान करेंगे। इस मौके पर उन्होंने यह भी कहा कि इस भारी बारिश और बाढ़ से उत्पन्न स्थिति को देखते हुए किसानों को हर संभव आर्थिक और सामाजिक सहायता देने के लिए सरकार पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

पाकिस्तान रक्षा मंत्री की भारत पर युद्ध की धमकी बोले- 'इंशाअल्लाह, विमानों के मलबे में दब जाएगा'

(जीएनएस)। नई दिल्ली/इस्लामाबाद। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने रविवार को एक उग्र बयान देते हुए भारत को युद्ध की धमकी दी। उन्होंने कहा कि यदि भारत ने भविष्य में कोई दुस्साहस किया, तो पाकिस्तान पूरी ताकत से जवाब देगा। उनका यह बयान भारतीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और थलसेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी की हालिया सख्त चेतावनियों के जवाब में आया।

आसिफ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा, ₹भारत सरकार घरेलू मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए तनाव बढ़ा रही है। पाकिस्तान अल्लाह के नाम पर बना देश है, हमारे

रक्षक अल्लाह के सिपाही हैं। इस बार इंशाअल्लाह, भारत अपने विमानों के मलबे के नीचे दब जाएगा। अल्लाहु अकबर।₹ उनका यह बयान न सिर्फ आपत्तिजनक है, बल्कि क्षेत्र में शांति और स्थिरता के लिए गंभीर चिंता का विषय भी बन गया है।

इससे पहले भारतीय वायुसेना प्रमुख एपी सिंह ने शुक्रवार को 'ऑपरेशन सिंदूर' का विवरण साझा करते हुए बताया था कि इस कार्रवाई में पाकिस्तान के कई सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया गया। उनके अनुसार, भारतीय वायुसेना ने F-16 फाइटर जेट्स और सर्विलांस विमानों सहित पाकिस्तान के कई सैन्य उपकरणों को ध्वस्त किया। तीन एयरबेस के हैंगरों पर हमले में 4-5 पाकिस्तानी फाइटर जेट्स तबाह हुए। सिंह ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय विमान 300 किमी तक पाकिस्तान में घुसकर सटीक हमले करने में सफल रहे। ख्वाजा आसिफ ने अपने पोस्ट में भारत पर तंज कसते हुए कहा कि भारत अपनी '0-6 की हार' की बदनामी से ध्यान हटाने की कोशिश कर रहा है। हालांकि उन्होंने यह स्पष्ट नहीं किया कि ₹0-6₹ किस सन्दर्भ में कहा गया है। सैन्य विश्लेषकों के अनुसार, यह पाकिस्तान की मनगढ़ंत बयानबाजी का हिस्सा प्रतीत होती है, क्योंकि हाल के किसी भी संघर्ष में भारत को ऐसी कोई पराजय नहीं मिली है।

भारत सरकार की ओर से अभी तक इस बयान पर कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है। रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि पाकिस्तान आर्थिक और राजनीतिक संकटों से जूझ रहा है और ऐसे समय में भारत के खिलाफ बयानबाजी कर आंतरिक समस्याओं से ध्यान भटकाने का प्रयास कर रहा है।

सोनम वांगचुक ने लेह हिंसा मामले में स्वतंत्र न्यायिक जांच की मांग की, जेल में रहने की जताई तैयारी

(जीएनएस)। जयपुर। लेह में हाल ही में हुई हिंसा में चार लोगों की मौत के बाद सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने स्वतंत्र न्यायिक जांच की मांग करते हुए स्पष्ट किया है कि जब तक इस मामले की निष्पक्ष जांच नहीं होती, वह जेल में रहने के लिए तैयार हैं। यह बयान उन्होंने जोधपुर सेंट्रल जेल से अपने बड़े भाई त्सेतन दोरजे और वकील मुस्तफा हाजी के माध्यम से दिया। शनिवार को विशेष अनुमति के तहत जेल में उनसे मुलाकात की गई, जिसमें उन्होंने अपनी मांगों और विचारों को साझा किया।

वकील मुस्तफा हाजी ने बताया कि सोनम शारीरिक और मानसिक रूप से पूरी तरह स्वस्थ हैं। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि लेह में हुई हिंसा के दौरान जान गंवाने वाले परिवारों के प्रति उन्हें गहरी संवेदना है। सोनम ने इस अवसर पर जनता से अपील की कि वे छठी अनुसूची और राज्य का दर्जा प्राप्त करने की मांग के संदर्भ में शांति और एकता बनाए रखें। उनका मानना है कि सामूहिक सहयोग और शांतिपूर्ण मार्ग से ही समाज में स्थायी समाधान लाया जा सकता है।

सोनम वांगचुक को 24 सितंबर को राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम (NSA) के तहत गिरफ्तार किया गया था और 26 सितंबर को उन्हें जोधपुर सेंट्रल जेल भेजा गया। इस गिरफ्तारी के बाद उनकी पत्नी गीतांजलि जे अंगमो ने सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर कर उनके रिहाई की मांग की है। उनकी याचिका पर 6 अक्टूबर को सुनवाई होने वाली है।

सोनम वांगचुक के इस कदम ने सामाजिक और राजनीतिक हलकों में चर्चा का विषय बना दिया है। उनका कहना है कि केवल कानूनी प्रक्रिया और निष्पक्ष न्याय के माध्यम से ही इस प्रकार की हिंसा के मामलों का समाधान संभव है। उन्होंने लोगों से भी अपील की कि वे संवेदनशील मामलों में अफवाहों या हिंसक प्रतिक्रिया से दूर रहें और कानून का पालन करें। इस घटना ने राज्य में सुरक्षा व्यवस्था और प्रशासनिक जवाबदेही पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। राजनीतिक और सामाजिक विश्लेषक मानते हैं कि सोनम का रुख और उनके द्वारा जेल में रहने का फैसला न्यायपालिका और सरकार के लिए यह संदेश है कि नागरिकों की मांगों और हिंसा के मामलों में पारदर्शिता और जवाबदेही अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सोनम का यह कदम न्याय और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के प्रति उनके समर्पण को दर्शाता है। उनका यह भी मानना है कि न्यायिक जांच से ही न केवल दोषियों की पहचान हो सकती है, बल्कि भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए प्रभावी कदम भी उठाए जा सकते हैं। उनका संदेश राज्य और केंद्र सरकार के लिए एक चेतावनी के रूप में भी देखा जा रहा है कि हिंसा के मामलों को हल करने में विलंब या पक्षपात नहीं होना चाहिए।

भारत बनेगा एआई महाशक्ति — ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा मोदी के विजन से दुनिया के शीर्ष 5 देशों में शामिल होगा भारत

(जीएनएस)। नई दिल्ली में आयोजित चौथे कौटिल्य आर्थिक सम्मेलन में केंद्रीय संचार और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया ने भारत की डिजिटल क्रांति, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और आत्मनिर्भर तकनीकी क्षमता पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने न केवल वैश्विक चुनौतियों को अवसरों में बदला है, बल्कि अब वह एआई और डिजिटल नवाचार के क्षेत्र में दुनिया के शीर्ष पांच देशों में शामिल होने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

सिंधिया ने अपने संबोधन में कहा कि कोविड-19 महामारी के कठिन दौर ने दुनिया को यह सिखाया कि उद्योग, शिक्षा और संचार — सब कुछ एक छोटी सी माइक्रोचिप पर निर्भर हो गया है। भारत ने इस चुनौती को अवसर में बदला और 76,000 करोड़ के "भारत सेमीकंडक्टर मिशन" की शुरुआत की। इस मिशन के अंतर्गत विभिन्न राज्यों में सेमीकंडक्टर निर्माण इकाइयाँ स्थापित की जा रही हैं, और अब तक इस क्षेत्र में 1.6 लाख करोड़ से अधिक का निवेश हो चुका है। 85,000 से अधिक युवाओं को प्रशिक्षित किया जा चुका है, जिससे भारत आत्मनिर्भर और तकनीकी दृष्टि से मजबूत बन रहा है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आज विश्व आर्थिक अस्थिरता, जलवायु संकट और मुद्रास्फीति जैसी कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, लेकिन भारत ने इन परिस्थितियों में भी 7.8% की जीडीपी वृद्धि दर के साथ दुनिया को चकित किया है। उन्होंने कहा कि भारत अब ग्लोबल साउथ की आवाज बन चुका है और "न्याय, समानता और साझा विकास" का प्रतीक बनकर उभर रहा है।

सिंधिया ने बताया कि भारत में आज 1.22 अरब टेलीफोन ग्राहक और 94.4 करोड़ ब्रॉडबैंड उपयोगकर्ता हैं। यह पिछले दस वर्षों में पंद्रह गुना वृद्धि है। भारत ने केवल 22 महीनों में 99.8% जिलों में 5G नेटवर्क पहुँचाकर विश्व रिकॉर्ड बनाया है।

उन्होंने कहा कि भारत के डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर — जैसे कि UPI — अब सालाना 260 अरब से अधिक लेनदेन कर रहे हैं, जो दुनिया के कुल डिजिटल लेनदेन का लगभग 46% हिस्सा है।

प्रधानमंत्री मोदी के "आत्मनिर्भर भारत" मिशन की चर्चा करते हुए सिंधिया ने कहा कि यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक युगांतरकारी परिवर्तन है। हाल ही में प्रधानमंत्री ने ओडिशा के झारसुगुड़ा में भारत का पहला पूर्णतः स्वदेशी 4G स्टैक लॉन्च किया, जिसे सी-डॉट, टेजस नेटवर्क्स और टीसीएस के सहयोग से विकसित किया गया है। आज देश के कोने-कोने में 92,564 नए टावर स्थापित किए जा चुके हैं, जिससे भारत उन पाँच देशों में शामिल हो गया है जो पूरी तरह स्वदेशी टेलीकॉम इकोसिस्टम तैयार करने में सक्षम हैं।

उन्होंने बताया कि बीएसएनएल 17 साल बाद फिर से लाभ में आया है और उसका ग्राहक आधार 78 लाख से बढ़कर 2.2 करोड़ तक पहुँच गया है। अब सभी टावर 5G में अपग्रेड किए जा सकते हैं, जिससे भारत की डिजिटल शक्ति नए स्तर पर पहुँचेगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) पर बोलते हुए सिंधिया ने कहा कि यह भविष्य की संचार क्रांति का केंद्र है। "इंडिया एआई मिशन" के तहत भारत घरेलू एआई मॉडल, कम्प्यूटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर और स्टार्टअप्स को सशक्त बना रहा है। निजी क्षेत्र द्वारा अब तक 20,000 करोड़ मूल्य के 38,000 GPUs स्थापित किए जा चुके हैं और कुल निवेश $10 बिलियन से अधिक होने का अनुमान है। उन्होंने कहा कि भारत का लक्ष्य ऐसा एआई विकसित करना है जो भारतीय भाषाओं और भारतीय जरूरतों के अनुरूप हो, ताकि तकनीक का लाभ हर नागरिक तक पहुँचे।

अपने वक्तव्य के अंत में सिंधिया ने कहा कि भारत की प्रगति केवल आर्थिक नहीं, बल्कि बौद्धिक और आध्यात्मिक भी है। भारत आज फिनटेक, दूरसंचार, अक्षय ऊर्जा, स्टार्टअप्स और वैज्ञानिक अनुसंधान में अग्रणी है। मोबाइल डेटा उपयोग में विश्व में प्रथम, इंटरनेट उपयोगकर्ताओं और मोबाइल निर्माण में द्वितीय, स्टार्टअप्स में तृतीय और अक्षय ऊर्जा क्षमता में चतुर्थ स्थान भारत की इस अद्भुत यात्रा का प्रमाण है। उन्होंने कहा कि भारत 2027 तक विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अग्रसर है, और यह उपलब्धि केवल तकनीक से नहीं, बल्कि "वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना और स्वदेशी नवाचार की शक्ति से संभव हो रही है। सिंधिया ने अपने भाषण का समापन इन शब्दों में किया — "भारत अब केवल निवेश का गंतव्य नहीं, बल्कि दिशा देने वाला राष्ट्र बन चुका है — जो विश्व को समृद्धि, स्थिरता और सह-अस्तित्व का मार्ग दिखा रहा है।"

केंद्र ने बच्चों के कफ सिरप पर सख्त रुख अपनाया, दवा कंपनियों के लाइसेंस रद्द करने का अलर्ट

(जीएनएस)। नई दिल्ली। बच्चों के लिए बनायी जाने वाली कफ सिरप की गुणवत्ता और इसके संभावित दुष्प्रभावों को लेकर देशभर में बढ़ती चिंता के बीच केंद्र सरकार ने अब कड़ा कदम उठाने का फैसला किया है। केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव पुण्य सलिल श्रीवास्तव ने सोमवार को राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के स्वास्थ्य अधिकारियों के साथ उच्च स्तरीय बैठक में दवा निर्माता कंपनियों को चेतावनी दी कि संशोधित Schedule M के तहत निर्धारित गुणवत्ता मानकों का पालन न करने पर उनके लाइसेंस रद्द कर दिए जाएंगे।

सचिव श्रीवास्तव ने अभिभावकों से अपील की कि बच्चों में खांसी अक्सर सामान्य और स्वयं ही ठीक हो जाने वाली समस्या होती है, इसलिए बिना आवश्यकता के कफ सिरप देना स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन सकता है। उन्होंने कहा कि राज्यों को जनजागरूकता अभियान चलाकर माता-पिता और देखभालकर्ताओं को इस बात से अवगत कराना चाहिए कि हर खांसी पर दवा देना जरूरी नहीं है और हल्की खांसी में घरेलू उपाय और निगरानी बेहतर विकल्प हो सकते हैं।

बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि अस्पतालों से दवा से जुड़ी शिकायतों की रिपोर्ट समय पर मंगाई जाए और सभी रिपोर्टें IDSP-IHIP (Integrated Disease Surveillance Programme – Integrated Health Information Platform) पर दर्ज की जाएं। राज्यों के बीच समन्वय को बेहतर बनाने के निर्देश दिए गए ताकि किसी भी संदिग्ध मामले में तत्काल कार्रवाई की जा सके।

इस सख्ती की जरूरत मध्य प्रदेश, राजस्थान और अन्य राज्यों में बच्चों की मौत या गंभीर बीमारियों से जुड़े कफ सिरप मामलों के बाद महसूस की गई। इन मामलों में दवाओं में विषैले या मानक से कम गुणवत्ता वाले रसायनों की उपस्थिति पाई गई थी, जिससे न केवल बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हुआ बल्कि भारत की फार्मास्युटिकल छवि को भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नुकसान पहुंचा।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा जेनेरिक दवा निर्माता है और यहां से अनेक दवाएं निर्यात की जाती हैं। हाल के मामलों ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत में बनी दवाओं की गुणवत्ता को अंतरराष्ट्रीय मानकों पर खरा उतरना जरूरी है, विशेष रूप से बच्चों की दवाओं में किसी भी प्रकार का समझौता अस्वीकार्य है।

Schedule M, भारतीय दवा और सौंदर्य प्रसाधन अधिनियम का वह हिस्सा है जो दवा निर्माण प्रक्रिया और गुणवत्ता मानकों से संबंधित दिशा-निर्देश निर्धारित करता है। हाल ही में किए गए संशोधनों में मानकों को और कड़ा किया गया है और इसका पालन सभी दवा कंपनियों के लिए अनिवार्य कर दिया गया है।

केंद्र सरकार का यह कदम बच्चों की स्वास्थ्य सुरक्षा के प्रति स्पष्ट संदेश है। आने वाले समय में यह उम्मीद की जा रही है कि दवा निर्माता कंपनियां गुणवत्ता में कोई ढिलाई नहीं बरतेंगी और स्वास्थ्य विभाग निगरानी और कार्रवाई के स्तर को और भी सख्त करेगा। अभिभावकों को भी सावधान किया गया है कि किसी भी कफ सिरप या अन्य दवा को डॉक्टर की सलाह के बिना अपने बच्चों को न दें, क्योंकि हल्की खांसी और सामान्य स्वास्थ्य समस्याओं में घरेलू देखभाल और सतर्कता ही सबसे सुरक्षित उपाय हो सकते हैं।

नासिक में बढ़ते अपराधों को लेकर मनसे-उबाठा का संयुक्त जनाक्रोश मोर्चा, सत्ताधारी दलों पर निशाना

(जीएनएस)। नासिक। शहर में अपराध, गुंडागर्दी, नशे का कारोबार, अवैध साहूकारी, हनी ट्रैप और किसानों की समस्याओं में लगातार वृद्धि को लेकर महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) और शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे गुट – उबाठा) ने रविवार को एकजुट होकर 'जनाक्रोश मोर्चा' निकाला। इस मोर्चे के माध्यम से दोनों दलों ने प्रशासन, पुलिस और सत्ताधारी पार्टियों को चेतावनी दी कि अगर हालात में सुधार नहीं हुआ, तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा।

मोर्चे में शामिल नेताओं ने भाजपा, शिवसेना (शिंदे गुट) और राष्ट्रवादी कांग्रेस (अजित पवार गुट) पर सीधे आरोप लगाया कि सत्ता के लालच में ये दल अपराधियों और राष्ट्रविरोधी तत्वों को संरक्षण दे रहे हैं। नेताओं का कहना था कि जिन व्यक्तियों पर हत्या, अपहरण, जबरन वसूली, हनी ट्रैप जैसी गंभीर घटनाओं के आरोप हैं, उन्हें चुनावी टिकट और महत्वपूर्ण पद दिए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब सत्ता में बैठे लोग ही अपराधियों को अपने साथ लेकर चलते हैं, तो सिर्फ जागरूकता का नाटक करना व्यर्थ है।

मनसे और उबाठा नेताओं ने स्पष्ट किया कि यह प्रदर्शन पुलिस प्रशासन के खिलाफ नहीं है, बल्कि सत्ताधारी दलों की कार्यशैली और नीतियों के विरोध में आयोजित किया गया है। उनका कहना था कि शहर में बढ़ती अपराध की घटनाओं के पीछे राजनीतिक संरक्षण सबसे बड़ी वजह है। उन्होंने सत्ताधारी दलों से आग्रह किया कि पहले अपने उन नेताओं और कार्यकर्ताओं को पार्टी से बाहर निकालें जिनका आपराधिक या राष्ट्रविरोधी पृष्ठभूमि से संबंध है। जनता को गुमराह करने की बजाय ठोस कार्रवाई करना आवश्यक है। प्रदर्शन में नेताओं ने यह भी सवाल उठाया कि जब कुछ जनप्रतिनिधि अपने ही निर्वाचन क्षेत्रों को 'पाकिस्तान' कहकर अपमानित करते हैं, तो उनका जनता की समस्याओं और सुरक्षा से जुड़ाव कैसे हो सकता है। मोर्चे में शामिल नागरिकों ने भी कहा कि जनता अब पूरी तरह सच जान चुकी है। अपराधियों को पार्टी में रखना और फिर अपराध पर भाषण देना—इस तरह का दोहरा रवैया अब जनता के सामने नहीं चलेगा।

इस जनाक्रोश मोर्चे के दौरान सत्ताधारी दलों को सीधे चेतावनी दी गई कि अगर नासिक में अपराध और राजनीतिक संरक्षण के मामले में सुधार नहीं किया गया, तो आंदोलन और अधिक व्यापक और तेज होगा। मोर्चा निकालने वाले नेताओं का कहना था कि उनकी कोशिश केवल जनता को जागरूक करना और प्रशासन तथा पार्टियों को जिम्मेदार बनाना है, ताकि नासिक में कानून व्यवस्था में सुधार हो और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

उत्तर प्रदेश की कृषि अर्थव्यवस्था ने 7 ट्रिलियन रुपए का मुकाम छुआ, जैविक खेती और आधुनिक तकनीक को बढ़ावा

(जीएनएस)। अयोध्या। आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज के 27वें दीक्षांत समारोह में कृषि, शिक्षा एवं अनुसंधान राज्यमंत्री बलदेव सिंह औलख ने घोषणा की कि उत्तर प्रदेश की कृषि अर्थव्यवस्था पिछले आठ वर्षों में तीन गुना से अधिक बढ़कर 2024-25 में लगभग 7 ट्रिलियन रुपए तक पहुँच गई है। इस अवसर पर उन्होंने राज्य की कृषि प्रगति, जैविक खेती और आधुनिक तकनीकों के महत्व पर जोर दिया।

राज्यमंत्री औलख ने कहा कि स्थाई कृषि और आजीविका सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग कम करना होगा और जैविक खेती को बढ़ावा देना जरूरी है। इसके साथ ही जल संसाधनों के कुशल उपयोग के लिए ड्रिप सिंचाई और स्प्रिंकलर जैसी सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि यह कदम न केवल उत्पादन बढ़ाने में मदद करेगा, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और किसानों की आय बढ़ाने में भी सहायक होगा।

उत्तर प्रदेश की कृषि उत्पादकता के आंकड़े भी उत्साहवर्धक हैं। वर्ष 2023-24 में राज्य ने 6.68 करोड़ टन खाद्यान्न का उत्पादन किया, जो भारत के कुल उत्पादन का लगभग 18.14% है। गेहूँ का 30.84%, चावल का 14%, आलू का 33%, गन्ने का 47.3%, दलहन का 9.24% और तिलहन का 6.12% उत्पादन उत्तर प्रदेश में होता है। इसके अलावा, राज्य देश का सबसे बड़ा सब्जी उत्पादक भी है, जहाँ कुल सब्जी उत्पादन का लगभग 16% होता है। वर्ष 2024-25 में राज्य का कुल खाद्यान्न उत्पादन 73.7 मिलियन टन तक पहुंच गया, जबकि दूध उत्पादन 388 लाख टन दर्ज किया गया, जो देश में प्रथम स्थान पर है। मत्स्य उत्पादन में भी वर्ष 2023-24 में 26.4% की वृद्धि हुई।

औलख ने विश्वविद्यालय के योगदान को भी सराहा। उन्होंने कहा कि आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पूर्वी उत्तर प्रदेश में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में अग्रणी है। इस वर्ष विश्वविद्यालय को प्राकृतिक खेती का नोडल सेंटर नियुक्त किया गया है। पिछले वर्ष विश्वविद्यालय को NAAC में सर्वोच्च ग्रेड A++ प्राप्त हुआ और इस वर्ष NIRF 2025 में रैंकिंग हासिल की गई, जो राज्य में कृषि शिक्षा और अनुसंधान की उत्कृष्टता को दर्शाता है। भविष्य की दिशा पर बोलते हुए औलख ने कहा कि राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था का यह विस्तार स्थायी उत्पादन, जैविक खेती और आधुनिक तकनीकों के सहयोग से और बढ़ सकता है। उन्होंने विश्वविद्यालय की भूमिका, नवाचार और अनुसंधान को इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देने वाला बताया और कहा कि यह प्रयास न केवल किसानों की आय बढ़ाएगा, बल्कि उत्तर प्रदेश को देश में कृषि क्षेत्र में अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित करेगा।

हैदराबाद में BMW ने मचाई तबाही, तीन वाहन टकराए और महिला गंभीर रूप से घायल

(जीएनएस)। नई दिल्ली। हैदराबाद के बाहरी इलाके में शनिवार को एक तेज रफ्तार BMW कार ने दो कारों और एक बाइक को टक्कर मार दी, जिससे बाइक पर पीछे बैठी एक महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। हादसा माई होम अवतार सर्कल, नरसिंगी के पास रेड सिग्नल पर खड़ी वाहनों के बीच हुआ। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायल महिला को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया।

घटना के दौरान BMW की गति इतनी अधिक थी कि टकराने से तीनों वाहन बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। हादसे के बाद ड्राइवर अभिषेक चंद्रा मौके से फरार हो गया, लेकिन पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए उसे गिरफ्तार कर लिया। प्रारंभिक जांच में पुलिस को शक है कि चालक शराब पीकर गाड़ी चला रहा था, जिससे यह हादसा हुआ।

नरसिंगी पुलिस स्टेशन में इस संबंध में मामला दर्ज कर लिया गया है और BMW कार को जब्त कर लिया गया है। इस पूरी घटना का दृश्य सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गया है, जो पुलिस जांच में मदद कर रहा है। अधिकारियों ने नागरिकों से अपील की है कि तेज रफ्तार वाहन चलाने और शराब पीकर गाड़ी चलाने से बचें, ताकि ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

हैदराबाद पुलिस ने कहा कि घायल महिला का इलाज चल रहा है और ड्राइवर के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। यह हादसा सड़क सुरक्षा और ट्रैफिक नियमों का पालन न करने के खतरनाक परिणामों का एक स्पष्ट उदाहरण है।

गुवाहाटी विश्वविद्यालय के तीन प्रोफेसर बने दुनिया के शीर्ष 2% वैज्ञानिक, देश को गर्व

(जीएनएस)। नई दिल्ली। गुवाहाटी विश्वविद्यालय के तीन प्रोफेसरों ने विश्व विज्ञान समुदाय में अपनी पहचान बनाई है और अमेरिका के स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा तैयार की गई दुनिया के शीर्ष दो प्रतिशत वैज्ञानिकों की सूची में जगह बना कर भारत का नाम गौरवान्वित किया है। इस सूची में शामिल होने वाले प्रोफेसरों में मौसम विज्ञान के विशेषज्ञ भूपेंद्र नाथ गोस्वामी, रसायन विज्ञान विभाग के प्रोफेसर प्रदीप फुकन और गणित विभाग के प्रोफेसर बिपन हजारिका शामिल हैं।

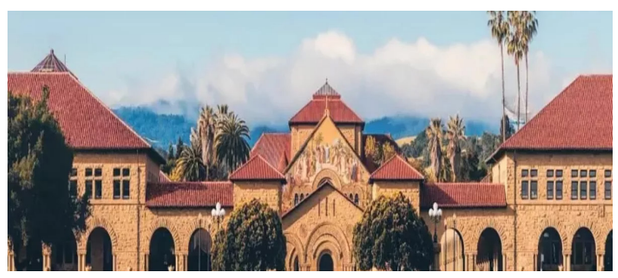

स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय हर साल इस रैंकिंग को तैयार करता है, जिसका मानदंड अत्यंत सख्त और व्यापक है। वैज्ञानिकों का चयन साइटेशन मीट्रिक्स, एच-इंडेक्स, को-आथरशिप-एडजस्टेड एचएम इंडेक्स, आथरशिप पोजीशन साइटेशन और सी-स्कोर जैसे कंपोजिट इंडिकेटरों के आधार पर किया जाता है। इन सभी मानकों में खरा उतरने वाले ही इस प्रतिष्ठित सूची में स्थान पाते हैं।

2025 की इस सूची में भारतीय वैज्ञानिकों की संख्या बढ़कर यह दर्शाती है कि देश में शोध एवं नवाचार का क्षेत्र लगातार मजबूत हो रहा है। एकल वर्षीय श्रेणी में 6,239 और करियर पर्यंत श्रेणी में 3,372 भारतीय वैज्ञानिक इस सूची में शामिल हैं।

गुवाहाटी विश्वविद्यालय के कुलपति नानी गोपाल महंत ने कहा कि यह मान्यता विश्वविद्यालय और असम के लिए गर्व का विषय है। उन्होंने बताया कि यह सफलता हमारे संकाय के समर्पण, नवाचार और वैश्विक प्रभाव को दर्शाती है। उन्होंने कहा कि इससे विश्वविद्यालय की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा और अनुसंधान क्षमताओं को भी बल मिलेगा।

विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे वैज्ञानिक न केवल अपने क्षेत्र में नवीनतम शोध और प्रगति करते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनते हैं। गुवाहाटी विश्वविद्यालय ने इस उपलब्धि को समारोह और स्थानीय मीडिया के माध्यम से साझा कर इसे पूरे राज्य और देश के लिए गौरव का क्षण बनाया है।